मई, 2022 वर्ष : 43 अंक : 05 www.indiatibet.net

तिब्बत की पहली हिन्दी समाचार पत्रिका

तिब्बत देश

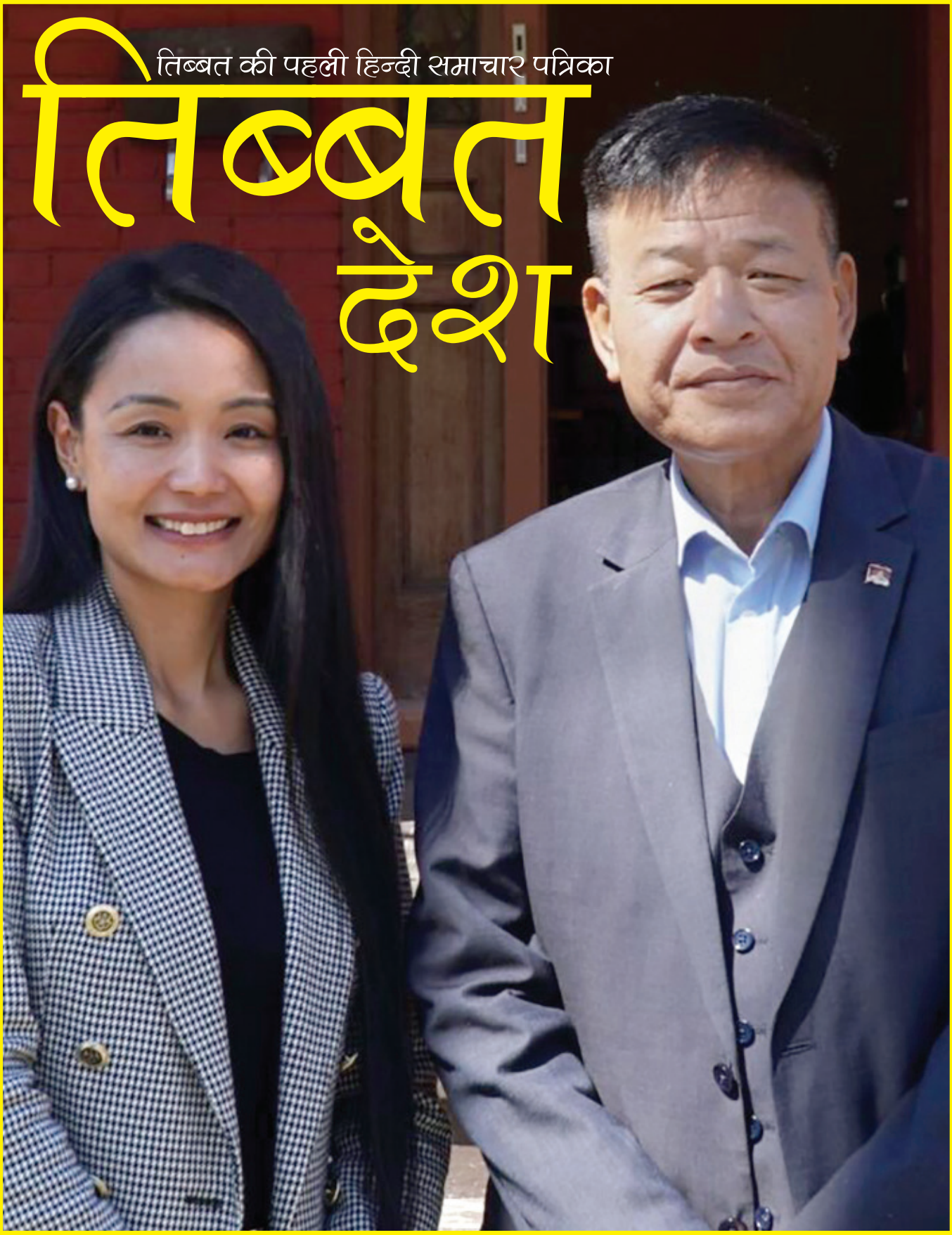

ओंटारियो पॉर्लियामेंटरी फ्रेंड्स ऑफ तिब्बत' की अध्यक्ष और कनाडा की एमपीपी भूटीला करपोछे से मुलाकात के दौरान सिक्योंग पेम्पा छेरिंग

मूल्य :10 रू , वार्षिक : 100 रू

मई, 2022 वर्ष : 43 अंक : 05

तिब्बत देश

तिब्बत की पहली हिन्दी समाचार पत्रिका पहली बार 1979 में प्रकाशित तिब्बत के बारे में सही जानकारी के साथ हर महीने आपके हाथो में

धर्मशाला के मैक्लॉडगंज स्थित परम पावन दलाई लामा के आवास पर उनके साथ तिब्बती मुद्दों के लिए अमेरिका की विशेष समन्वयक उज़रा ज़ेया

प्रधान संपादक
जमयंग दोरजी

सलाहकार संपादक
प्रो. श्यामनाथ मिश्र , डा. अतुल कुमार

प्रबंध संपादक
तेनजिन पलजोर , तेनजिन जोरदेन

वितरण प्रबंधक
छोन्यी छेरिंग

संपादकीय एवं प्रकाशन कार्यालय :
भारत तिब्बत समन्वय केन्द्र
एच -१० लाजपत नगर -३
नई दिल्ली -११००२४, भारत

तिब्बत देश में प्रकाशित विचरों से संपादक, प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

इसमें प्रकाशित सामग्री का उपयोग अन्यत्र किया जा सकता है। कृपया तिब्बत देश का उल्लेख अवश्य करें ।

समाचार -

- मोनलाम ग्रैंड तिब्बती शब्दकोश का विमोचन
- परम पावन दलाई लामा के साथ श्रोताओं के बीच पहुंची तिब्बती मुद्दों के लिए अमेरिका की विशेष समन्वयक उज़रा ज़ेया
- तिब्बतियों ने तिब्बती मुद्दों के लिए अमेरिकी विशेष समन्वयक उजरा ज़ेया का धर्मशाला में जोरदार स्वागत किया
- लापता तिब्बती लेखक को चीन के किंघई प्रांत की जेल में होने की खबरें - गेंदुन ल्हुंद्रुप एक धार्मिक कार्यक्रम में शामिल होने के लिए जा रहे थे, जब उन्हें दिसंबर २०२० में गिरफ्तार किया गया।
- चीनी बिजली संयंत्र के लिए तिब्बतियों को जबरन विस्थापित किया गया - एक मठ और आसपास के गांव में रहने वाले तिब्बतियों को 'मुआवजा दिए बिना' स्थानांतरित करने का आदेश दिया गया है।
- गिरती सेहत के कारण तिब्बती राजनीतिक कैदी की जेल से रिहाई - नोरज़िन वांग्मो को २०२० में आत्मदाह करनेवाले एक तिब्बती के बारे में समाचार साझा करने के आरोप में तीन साल की जेल की सजा सुनाई गई थी।
- कनाडाई संसद की विदेश मामलों और अंतरराष्ट्रीय विकास पर स्थायी समिति ने सिक्योंग पेन्पा छेरिंग के अनुमोदन के बाद चीन-तिब्बत वार्ता का समर्थन करने वाले प्रस्ताव को पारित किया
- न्यूयॉर्क में युवा तिब्बतियों और पेशेवरों ने सीटीए की वोलेंटियरली तिब्बत एडवोकेसी इनिशिएटिव (स्वैच्छिक तिब्बत पैरवी पहल) पर चर्चा की
- कनाडा में अपने आधिकारिक कार्यक्रमों के अंतिम चरण में सिक्योंग ने एमपीपी भूटीला करपोछे से मुलाकात की
- जेएनयू की कुलपति और प्रशासकों से मिले शिक्षा कालोन व सचिव

समाचार -

- राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग की सदस्य श्रीमती रिनचेन ल्हामो की शिलांग की आधिकारिक यात्रा
- तिब्बती छात्र तेनज़िन येशी को २०२२ का 'सर्वश्रेष्ठ युवा वैज्ञानिक' पुरस्कार मिला
- भारत-तिब्बत समन्वय संघ का विशेष प्रतिनिधिमंडल राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद से मिला
- बीटीएसएम दिल्ली प्रांत ने भारत-तिब्बत सहयोग मंच का २३वां स्थापना दिवस मनाया
- समिति अधिकारी उज्जवल पंत ने निर्वासित तिब्बती संसद का दौरा किया
- टोक्यो में 'ए गोल्डन वीक तिब्बत फेस्टिवल जापान' का आयोजन
- चिली के पांच सांसदों ने ११वें पंचेन लामा की तत्काल रिहाई की अपील की
- तिब्बत के लिए जर्मन संसदीय समूह ने चीन से तिब्बत के ११वें पंचेन लामा को रिहा करने का आह्वान किया
- तिब्बत के लिए जर्मन संसदीय समूह ने चीन से तिब्बत के ११वें पंचेन लामा को रिहा करने का आह्वान किया
- ऑस्ट्रेलिया तिब्बत काउंसिल ने 'ओवरकमिंग ऑब्स्टेकल: प्रोटेक्टिंग तिब्बतन रिलिजियस आइडेंटिटी (बाधाओं पर काबू: तिब्बती धार्मिक पहचान की रक्षा)' शीर्षक से तिब्बती धार्मिक पहचान पर व्यवस्थित हमले पर नई रिपोर्ट जारी की
- संयुक्त राष्ट्र की मानवाधिकार प्रमुख को अति निगरानी में कराई जानेवाली झिंझियांग की यात्रा से बहुत कम उम्मीदें उग्यूर, तिब्बती और चीनी कार्यकर्ताओं को डर है कि मिशेल बाचेलेट अधिकारों के हनन के खिलाफ चीन पर कार्रवाई करने में विफल हो जाएंगी।

मुद्रक एवं प्रकाशक जमयांग दोरजी द्वारा प्रेम गुलाटी , डोली ऑफसेट प्रिंटर्स , डी -१५२ , एफ. एफ. सी. ओखला , नई दिल्ली -११००२० से मुद्रीत

तिब्बत के बारे में नियमित जानकारी के लिए भारत - तिब्बत समन्वय केन्द्र की वेबसाइट www.indiatibet.net Email: indiatibet7@gmail.com

- युवा तिब्बतियों को निशाना बना रहा चीन

अपनी बात

भारत सरकार से स्पष्ट तिब्बत नीति अपनाने की अपील

तिब्बत मामले के लिए अमरीकी विशेष समन्वयक अजरा जेया की धर्मशाला में मई की यात्रा के बाद से तिब्बती समुदाय एवं तिब्बत समर्थक संगठनों की मांग है कि भारत सरकार विदेश मंत्रालय के अन्तर्गत तिब्बत संबंधी एक अलग विभाग बनाये। भारत सरकार स्पष्ट तिब्बत नीति अपनाये तथा 2010 से बंद तिब्बत.चीन वार्ता पुनःप्रारंभ कराये। भारत सरकार चीन पर दबाव बढ़ाये तभी वह निर्वासित तिब्बत सरकार तथा परम पावन दलाई लामा के प्रतिनिधियों के साथ वार्ता करेगा। भारत में धर्मशाला ;हिमाचलप्रदेशद्ध से संचालित निर्वासित तिब्बत सरकार वास्तव में लोक तांत्रिक तरीके से श्विचार्चितश्सरकार है। वार्ता का आधार हो मध्यममार्ग नीति। यह तिब्बत एवं चीनए दोनों के लिये कल्याणकारी है।

मध्यममार्ग नीति के अनुसार तिब्बत पूर्ण आजादी की मांग छोड़कर सिर्फ श्वास्तविक स्वायत्तताश्के लिये तैयार है। स्वायत्तता की मांग चीनी संविधान और चीनी राष्ट्रीयता कानून के अनुकूल है। प्रतिरक्षा और अंतरराष्ट्रीय विषय चीन के पास रहें तथा धर्मए सांस्कृतिए शिक्षाए कृषि आदि अन्य विषय तिब्बतियों को सौंपे जायें। चीन की भौगोलिक एकता.अखण्डता तथा संप्रभुता की रक्षा के साथ ही तिब्बतियों की स्वशासन की मांग भी मध्यममार्ग नीति से पूर्ण हो जायेगी। अतः भारत सरकार से इस दिशा में प्रभावी कूटनीतिक प्रयास की उम्मीद तर्क संगत है।

अजरा जेया के दस सदस्यीय प्रतिनिधि मंडल में नई दिल्ली स्थित कार्यवाहक अमरीकी राजदूत भी शामिल थे। प्रतिनिधि मंडल का धर्मशाला परिसर में आगमन पर तिब्बतियों द्वारा हर जगहों पर हार्दिक स्वागत किया गया था। परम पावन दलाई लामा से प्रतिनिधिमंडल ने तिब्बत की चिन्ताजनक आंतरिक स्थिति के बारे में जाना। दलाई लामा ने तिब्बत मामले में जारी अमरीकी सहयोग एवं समर्थन के लिये आभार व्यक्त किया। उन्होंने आग्रह किया कि तिब्बत समस्या का हल शीघ्र निकाला जाये। अमरीकी विदेश मंत्रालय के अधीन कार्यरत तिब्बत मामले के लिए विशेष समन्वयक अजरा जेया के ने तृत्व में प्रतिनिधि मंडल ने तिब्बत सरकार के सिक्योंगए मंत्रियोंए सांसदों तथा अन्य पद अधिकारियों के साथ भेंट की। उसने तिब्बती न्याय व्यवस्था को भी प्रशांसनीय पाया। उसने अन्य तिब्बती संस्थाओं एवं संगठनों के भी विचार जाने। हर जगह प्रतिनिधि मंडल ने अमरीकी तिब्बत नीति को स्पष्ट करते हुए कहा कि अमरीका सदैव तिब्बती संघर्ष एवं लोकतंत्र के साथ रहेगा। वह निर्वासित तिब्बत

सरकार का समर्थन और

सहयोग जारी रखेगा। भारत सरकार से अमरीका के समान विदेश मंत्रालय के अधीन तिब्बत विभाग तथा तिब्बत नीति बनाने की अपील से चीन भले चिंतित होए लेकिन यह न्यायो चित है। भारत के साथ उसके संबंधों में तिब्बत की अनदेखी असंभव एवं अव्यावहारिक है। चीन को तिब्बत एवं दलाई लामा के प्रति अपनी सोच बदलनी होगी। वह 1949 से स्वतंत्र तिब्बत पर अवैध कब्जा किये हुए है तथा वहॉ के धर्म गुरु दलाई लामा को विघटनकारी एवं आतंककारी समझता है। इस से चीन की अन्तरराष्ट्रीय छवि लगातार खराब हो रही है। नोबल पुरस्कार समेत कई राष्ट्रीय एवं अन्तरराष्ट्रीय सरकारी तथा गैर सरकारी सम्मान और पुरस्कार प्राप्त कर चुके दलाई लामा ने ही तिब्बत के सवाल को समस्त संसार का सवाल बना दिया है। इसी मई में उनके सुखमय दीर्घ जीवन हेतु साक्य बौद्व परंपरा के प्रमुख ने धर्मशाला में विशेष पूजा की। इस अवसर पर दलाई लामा ने आश्वस्त किया कि वे अभी और 15.20 साल तक जीवित रहेंगे। उनके इस आश्वासन से तिब्बतियों तथा तिब्बत समर्थकों का खुश होना स्वाभाविक है।

तिब्बत के धार्मिक मामले में चीन का धर्म विरोधी व्यवहार अत्यन्त निंदनीय है। इसी 17 मई को 11वें पंचेन लामा गेदुन छुक्यी निमा के दुर्भाग्यपूर्ण सपरिवार चीनी अपहरण की साल गिरह है। इस अवसर पर विभिन्न राष्ट्रीय. अन्तरराष्ट्रीय संगठनों सहित तिब्बत सरकार के सूचना एवं अन्तरराष्ट्रीय संबंध विभाग ने उनकी शीघ्र रिहाई तथा उनके बारे में जानकारी उपलब्ध कराने की मांग की है। इस जोरदार मांग का महत्वपूर्ण कारण है तिब्बत के राज्याध्यक्ष ;सिक्योंगद्व पेंपा छेरिंग का तिब्बती बस्तियों का लगातार दौरा तथा तिब्बतन एडवोकेसी कैंपेन की सफल ता। पेंपा छेरिंग उत्तर पूर्व तथा मध्य भारत स्थित तिब्बती बस्तियों का दौरा कर चुके हैं। अभी 29 मई से वे दक्षिण भारत में प्रवास करेंगे। उनके प्रवास के परिणाम स्वरुप तिब्बतियों तथा तिब्बत सर्मथकों को संघर्ष की नई ऊर्जा मिलती है। स्थानीय भारतीय प्रशासन तथा संगठनों एवं व्यक्तियों का सहयोग.समर्थन भी सुनिश्चित हो जाता है।

विश्व के विभिन्न देशों में स्थित तिब्बती कार्यालय सुव्यवस्थित रुप से तिब्बत एडवोकेसी कैंपेन चला रहे हैं। वे उन देशों में तिब्बत में जारी क्रूरता पूर्ण चीनी नीति के दुष्परिणामों की जानकारी देते हैं। वे बता रहे हैं कि विस्तारवादी चीन सरकार पर अंकुश विश्व शांति के लिये बेहद जरुरी है। व्यापक पैमाने पर ग्लेशियर होने के कारण तिब्बत को संसार की छत तथा तीसरा ध्रुव कहा जाता है। भोगवादी चीनी नीति के फलस्वरुप तिब्बत के ग्लेशियर सिकुड़ते जार हे हैं। पर्यावरण तथा प्राकृतिक संसाधन संकटग्रस्त हैं। मानवाधिकारों का हनन जारी है। सांस्कृतिक.धार्मिक.ऐतिहासिक स्थल सुनियोजित विध्वंस के शिकार हैं। इस कैं पेनने चीन को बेनकाब कर दिया है। स्पष्ट है कि सिक्योंग पेंपा छेरिंग की तिब्बती बस्तियों की लगातार यात्रा से इन बस्तियों में कल्याण कारी योजनाओं के सुनियोजित क्रियान्वयन को तथा तिब्बती संघर्ष को नई गतिप्राप्त हुई है। इसी तरह तिब्बतन एडवोकेसी कैंपेन के फल स्वरुप तिब्बतियों के समर्थन में चीनी विरोध के बावजूद विश्व जनमत अधि का धिक मुखर हो रहा है। ऐसे अनुकूल समय में भारत सरकार भी विश्व हित में सुदृढ़ विश्व जनमत के अनुरुप चीन पर दबाव बढ़ाये।

प्रो. श्यामनाथ मिश्र
पत्रकार एवं अध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग
राजकीय महाविद्यालय, तिजारा (राजस्थान)
मो.-9079352370, 8764060406
E-mail & Facebook: - shyamnathji@gmail.com

• मोनलाम ग्रैंड तिब्बती शब्दकोश का विमोचन

dalailama.com, २७ मई २०२२

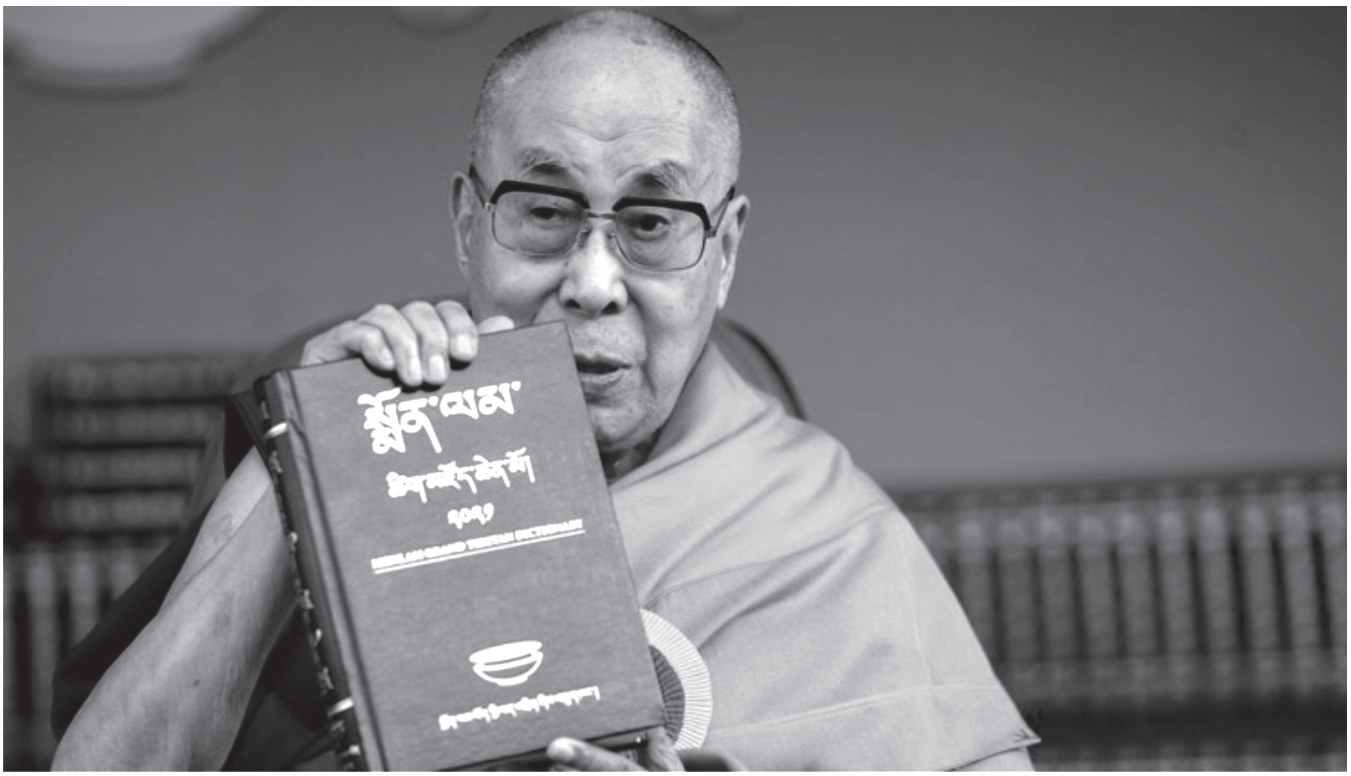

धर्मशाला स्थित मुख्य तिब्बती मंदिर त्सुगलगखंग के उद्यान में मोनलाम ग्रैंड तिब्बती शब्दकोश का विमोचन करते परम पवन दलाई लामा

थेगछेन छोलिंग, धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश, भारत। आज २७ मई की सुबह परम पावन दलाई लामा के कर कमलों द्वारा मोनलाम ग्रैंड तिब्बती शब्दकोश का विमोचन किया गया। विमोचन समारोह परम पावन के आवास के निकट ही अवस्थित मुख्य तिब्बती मंदिर त्सुगलगखंग के उद्यान में आयोजित किया गया था। इस अवसर पर उपस्थित लोगों में शाक्य गोंग्मा रिनपोछे, ४२वें और ४३वें शाक्य त्रिजिन, बॉन परंपरा के प्रमुख, केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के सदस्य, मित्र और समर्थक शामिल थे।

विमोचन के लिए परम पावन आने आवास के दरवाजे से निकलकर मंदिर प्रांगण से होते हुए चले। रास्ते में वे अनुयायियों को आशीर्वाद देते और उनसे बातचीत करते रहे। उन्होंने कुछ दर्शनार्थियों से हाथ मिलाया, कुछ अन्य से थोड़ी- बहुत बातचीत की। उन्होंने लोगों से माला और अन्य पूजा सामग्री स्वीकार की और उन्हें आशीर्वाद दिया। महीनों तक कोविड से जुड़ी पाबंदियों के बाद लोगों से आमने- सामने मिलकर उन्हें असीम आनंद की अनुभूति हो रही थी।

सभा को संबोधित करते हुए परम पावन ने कहा, 'हम तिब्बतियों की समृद्ध धार्मिक और सांस्कृतिक परंपरा है। जब हम तिब्बत में थे, हम इस बात से अवगत नहीं थे कि हमारी यह परंपरा अन्य परंपराओं की तुलना में कैसी है। लेकिन जब हम निर्वासन में तिब्बत से बाहर निकले और भारत आए तो हमें पता चला कि हमारी विरासत कितनी मूल्यवान है। तिब्बती बौद्ध धर्म एक व्यावहारिक परंपरा है, जिसके मूल में नकारात्मक भावनाओं से पार पाने और मन को शांत करने के तरीके हैं। अपनी दैनिक साधना में मैं बोधिचित्त के जागरण और शून्यता की समझ विकसित करने पर ध्यान केंद्रित करता हूं, जो एक साथ मुझे गहरी आंतरिक शांति प्रदान करते हैं।

उन्होंने कहा, 'अन्य धार्मिक परंपराओं के साधक प्रार्थना पर ध्यान केंद्रित करते हैं, लेकिन हम अपने मानसिक दृष्टिकोण को बदलने की कोशिश करते हैं। आचार्य शांतिदेव 'बोधिसत्व के जीवन पथ के लिए मार्गदर्शन (गाइड टू द बोधिसत्वाज वे ऑफ लाइफ)' में बताते हैं कि जब धैर्य धारण करने की बात आती है तो हमारा दुश्मन ही हमारा सबसे अच्छा शिक्षक होता है। यदि हम इस पर ध्यान से विचार करें तो ऐसी कोई भी प्रतिकूल परिस्थितियाँ नहीं हैं, जिन्हें अनुकूल नहीं बनाया जा सकता है। नालंदा परंपरा के केंद्र में मन और भावनाओं के कामकाज को समझने की जरूरत है।

उन्होंने कहा, 'लोग दुनिया में शांति की बात करते हैं, लेकिन अगर आपके दिल में गुस्सा और नफरत भरा है तो शांति के बारे में बात करना सिर्फ पाखंड है। इसके बजाय हमें करुणा के आधार पर दूसरों का किसी तरह का नुकसान नहीं करने यानी अहिंसा करने की प्राचीन भारतीय परंपरा को विकसित करने की आवश्यकता है।'

'तिब्बती मनीषियों ने इस बात पर गहन चिंतन किया कि चीनी परंपरा से क्या लिया जाए और भारत से क्या स्वीकार किया जाए। उन्हें जो लाभकारी लगा उसे आत्मसात कर लिया। हम तिब्बतियों ने सभी प्रकार की कठिनाइयों का सामना किया है, लेकिन हमने मन के प्रशिक्षण की साधना के कारण अपनी आंतरिक शांति बनाए रखी है। लोगों के सामने जब चुनौतियां आती हैं तो वे शांति और सुकून पाने के लिए नींद की गोलियां लेने लगते हैं। लेकिन हम तिब्बतियों को ऐसा कुछ करने की जरूरत नहीं पड़ती है।'

'निर्वासन में हमने तिब्बती स्कूलों की स्थापना में भारत सरकार से मदद का अनुरोध किया जहां हमारे बच्चे अपनी भाषा में पढ़ सकें। तिब्बती भाषा के संरक्षण ने हमारे धर्म और संस्कृति को जीवित रखने की हमारी क्षमता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। मैं यहां उपस्थित अपने सभी मित्रों और धर्म मित्रों को याद दिलाना चाहता हूं कि हमारी विरासत के बारे में सबसे कीमती बात यह है कि वह हमें मानसिक शांति प्राप्त करने और बनाए रखने में मदद करती है।'

केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के सूचना और अंतरराष्ट्रीय संबंध विभाग के मॉडरेटर तेनज़िन छिमे ने सभी अतिथियों का गर्मजोशी से स्वागत किया। इनमें शाक्य गोंगमा रिनपोछे, ४२वें और ४३वें शाक्य पीठाधीश, रत्न वज्र रिनपोछे, ज्ञान वज्र रिनपोछे

और बॉन परंपरा के प्रमुख मेनरी ट्रिज़िन रिनपोछे शामिल थे। इस समारोह का उद्घाटन दीप प्रज्जवलित कर किया गया। मॉडरेटर छिमे ने इस अवसर पर मोनलम ग्रैंड तिब्बती डिक्शनरी परियोजना के क्यूरेटर आदरणीय लोबसांग मोनलाम से परियोजना के बारे में जानकारी देने का अनुरोध किया।

लोबसांग मोनलाम ने बताया कि दलाई लामा ट्रस्ट के सहयोग से २०० से अधिक लोगों ने लगातार नौ वर्षों तक अथक परिश्रम करके २२३ खंडों में इस शब्दकोश का संकलन किया है। यह शब्दकोश न केवल पुस्तक के रूप में उपलब्ध है, बल्कि यह ३७ विभिन्न ऐप्स और एक पूर्ण वेबसाइट पर भी ऑनलाइन है, जिसे समय-समय पर अपडेट किया जाएगा।

भंते मोनलाम ने गर्व के साथ घोषणा की कि २,००,००० से अधिक प्रविष्टियों वाला यह शब्दकोश दुनिया की किसी भी भाषा के सबसे बड़े शब्दकोशों में से एक है। यह तिब्बती संस्कृति की विशाल गहराई को उद्घाटित करता है। इस परियोजना को पूरा करना एक ऐतिहासिक उपलब्धि है जो तिब्बती सांस्कृतिक परंपराओं के संरक्षण में महत्वपूर्ण योगदान देगी।

उन्होंने कहा कि तिब्बत के अंदर चीनी हमारी भाषा और संस्कृति को खत्म करने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन यहां निर्वासन में हम उन्हें जीवित रखने के लिए और भी अधिक प्रयास कर रहे हैं। मैं उन सभी को धन्यवाद देना चाहता हूं जिन्होंने इस परियोजना को साकार करने में योगदान दिया है। हम इस पर काम करना जारी रखेंगे और हम इसे अगले दस वर्षों में फिर से अपडेट करेंगे।

'मैं इस शब्दकोश के संकलन से प्राप्त पुण्य को परम पावन दलाई लामा के लंबे जीवन और उनके सपनों को साकार होने के लिए समर्पित करता हूं। मैं परम पावन के कार्यालय को २२३ खंडों का एक पूरा सेट भेंट करता हूँ और प्रार्थना करता हूँ कि परम पावन और तिब्बती बौद्ध धर्म की सभी परंपराओं के नेता दीर्घायु हों। तिब्बत के लिए अच्छे दिन जल्द आएं।'

इसके बाद एक बार फिर से सभा को संबोधित करने के लिए परम पावन को आमंत्रित किया गया।

परम पावन ने कहा, 'हम तिब्बती हमेशा भारत और चीन के बीच रहे हैं, लेकिन सम्राट सोंगत्सेन गम्पो के शासनकाल के दौरान हमने भारतीय मॉडल के आधार पर अपनी खुद की लिपि और भाषा बनाई। भाषा और लिपि में सक्षम हो जाने के बाद आचार्य शांतरक्षित ने तिब्बतियों को बुद्ध के वचनों और अनगिनत भारतीय विद्वानों के ग्रंथों से भरपूर बौद्ध साहित्य का अनुवाद हमारी अपनी भाषा में करने के लिए प्रोत्साहित किया। यही कारण है कि मैं अक्सर अपने भारतीय दोस्तों से कहता हूं कि आप अतीत में हमारे गुरु थे। लेकिन अब हम आपके गुरु हो सकते हैं क्योंकि हमने कारणों और तर्कों पर आधारित नालंदा परंपरा को जड़ से संरक्षित किया है।

'हमारे पास क्रोध से निपटने की तकनीकें और प्रेम और करुणा पैदा करने के साधन मौजूद हैं। दूसरों के प्रति करुणा रखने की प्रवृत्ति व्यक्ति के भीतर मन की शांति को जन्म देती है, जिसका परिवार और व्यापक समुदाय पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। वास्तव में आज हम इतने परस्पर जुड़े हुए हैं कि इस तरह के तरीके विश्व में शांति के लिए महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। मन की शांति प्राप्त किए बिना विश्व शांति नहीं हो सकती है।'

'बुद्ध के उपदेशों में सबसे महत्वपूर्ण उनकी वह सलाह है कि उनके प्रवचनों पर आंख बंद करके विश्वास न करें। उन्होंने जोर देकर कहा कि अनुयायियों को उनके शब्दों की जांच करनी चाहिए। उनके प्रवचनों की जांच इस तरह करनी चाहिए जैसे एक सुनार सोने की शुद्धता की जांच करता है। जब हम दिग्नाग और धर्मकीर्ति जैसे तर्कशास्त्रियों के कार्यों को पढ़ते हैं तो पाते हैं कि वे दूसरों के विचारों का मूल्यांकन और आकलन करने के लिए बहुत अधिक समय खर्च करते थे।'

उन्होंने कहा कि आज चीनी कम्युनिस्ट कट्टरपंथी तिब्बती संस्कृति को समझे बिना इसकी आलोचना कर रहे हैं। हम वर्तमान में इन २२३ खंडों को चीन भेजने में असमर्थ हो सकते हैं, लेकिन ताइवान में ऐसे लोग होंगे जो इस बात की सराहना कर सकते हैं कि हमने किस तरह की संस्कृति को संरक्षित किया है।

'हम चीन से पूर्ण स्वतंत्रता की मांग नहीं कर रहे हैं, लेकिन हमें अपने धर्म और संस्कृति को जीवित रखने का अधिकार होना चाहिए। हम इस ज्ञान को अपने चीनी भाइयों-बहनों के साथ इस उम्मीद में साझा करना चाहेंगे कि ऐसा करने से हमारे बीच शांति को बढ़ावा मिलेगा।'

'हमारी संस्कृति का जन्म भारत में हुआ जिसे बेहतर तरीके से साबित करने के लिए आज हमारे पास हर तरह के साधन हैं। मुझे लगता है कि प्राचीन भारतीय ज्ञान के पहलुओं को आधुनिक विज्ञान के साथ जोड़ने से बहुत लाभ होगा। मैं दिल्ली में शिक्षाविदों और अन्य लोगों के साथ इस बात पर चर्चा करने के लिए उत्सुक हूं कि इसे कैसे किया जा सकता है। सबसे महत्वपूर्ण तत्व मन और भावनाओं के कामकाज को समझना है, जो मन की शांति की ओर ले जाता है। इससे लंबे समय तक दुनिया में शांति कायम रह सकती है।'

'चीनी कट्टरपंथी हमारे धर्म और संस्कृति के मूल्य को गलत समझते हैं। इस शब्दकोश का प्रकाशन, जिसका पहले से ही चीनी में अनुवाद किया जा रहा है, उन्हें सही तरीके से समझाने में मदद करेगा।'

'चीन में अध्ययन कर चुके मेरे परिचित एक तिब्बती ने मुझे बताया कि यद्यपि हम वर्तमान में चीनी राजनीतिक नियंत्रण में हैं, लेकिन लंबे समय में चीजें बदल जाएंगी और हम आध्यात्मिक रूप से उनकी मदद करने में सक्षम होंगे। जब चेयरमैन माओ ने मुझसे कहा कि धर्म अफीम है तो इसका कारण यह था कि वे इस बारे में बेहतर नहीं जानते थे। चीन में भारी भावनात्मक संकट है। हम वहां के लोगों को दिखा सकते हैं कि मन की शांति कैसे प्राप्त की जा सकती है।'

'जब हम निर्वासन में भारत आए तो हम अपने ज्ञान और संस्कृति की क्षमता के प्रति जागरूक हुए और हमने उन्हें जीवित रखने के लिए साहस और दृढ़ संकल्प के साथ काम किया। मैंने एक व्यक्ति के तौर पर जितना संभव था, वह सब किया है। आगे यहां उपस्थित आप सब लोग भी इसमें योगदान दे सकते हैं।'

• परम पावन दलाई लामा के साथ श्रोताओं के बीच पहुंची तिब्बती मुद्दों के लिए अमेरिका की विशेष समन्वयक उज़रा ज़ेया

tibet.net, १९ मई २०२२

धर्मशाला। तिब्बती मुद्दों के लिए अमेरिका की विशेष समन्वयक उजरा ज़ेया आज यानि गुरुवार १९ मई की सुबह परम पावन दलाई लामा के साथ धर्मशाला के मैक्लॉडगंज स्थित उनके आधिकारिक आवास पर श्रोताओं से रू-ब-रू हुईं। श्रोताओं में सिक्योंग पेन्पा छेरिंग, डीआईआईआर कालोन नोरज़िन डोल्मा, प्रतिनिधि नामग्याल चोएडुप और अमेरिका की विशेष समन्वयक के साथ आए प्रतिनिधिमंडल के सदस्य शामिल रहे।

अपने संबोधन के दौरान अमेरिका की विशेष समन्वयक ने परम पावन दलाई लामा को अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन और अमेरिकी लोगों की ओर से बधाई दी। उन्होंने

धर्मशाला के मैक्लॉडगंज स्थित परम पावन दलाई लामा के आवास पर उनके साथ तिब्बती मुद्दों के लिए अमेरिका की विशेष समन्वयक उज़रा ज़ेया

परम पावन दलाई लामा के अच्छे स्वास्थ्य के लिए शुभकामनाएं भी दीं और परम पावन द्वारा दिए गए शांति के संदेशों के लिए दुनिया की ओर से उनके प्रति आभार व्यक्त किया।

परम पावन दलाई लामा और तिब्बती मुद्दों के लिए अमेरिका की विशेष समन्वयक ने भी अमेरिका और भारत में स्वतंत्रता और लोकतंत्र की समृद्ध परंपराओं पर चर्चा की। परम पावन ने तिब्बती मुद्दों के लिए अमेरिका की विशेष समन्वयक से मिलने पर प्रसन्नता व्यक्त की और पूरी मानवता की एकता पर बल दिया। इस अवसर पर परम पावन ने अपने जीवन की चार मुख्य प्रतिबद्धताओं- सार्वभौमिक मूल्यों को बढ़ावा देना, धार्मिक सद्भाव को बढ़ावा देना, तिब्बत की संस्कृति और पर्यावरण का संरक्षण और प्राचीन भारतीय ज्ञान का पुनरुद्धार- की व्याख्या भी की। परम पावन दलाई लामा ने आगे कहा कि चीन एड़ी-चोटी का जोर लगा लेने के बावजूद तिब्बती लोगों को जीतने और उनके विचारों को बदलने में विफल रहा है। परम पावन ने कहा कि उल्टे स्वयं चीनी लोगों की सोच तेजी से बदल रही है।
तिब्बती मुद्दों के लिए अमेरिका की विशेष समन्वयक १८-१९ मई तक धर्मशाला के दो दिवसीय दौरे पर हैं। कल यानि बुधवार १८ मई को उन्होंने केंद्रीय तिब्बती प्रशासन का दौरा किया और सिक्योंग पेन्पा छेरिंग की अध्यक्षता वाले १६वें कशाग के साथ चर्चा की। उन्होंने निर्वासित तिब्बती संसद, तिब्बती प्रदर्शन कला संस्थान (टीआईपीए), तिब्बत संग्रहालय का भी दौरा किया और तिब्बती नागरिक समाज के सदस्यों से भी मुलाकात की।

• तिब्बतियों ने तिब्बती मुद्दों के लिए अमेरिकी विशेष समन्वयक उजरा ज़ेया का धर्मशाला में जोरदार स्वागत किया

tibet.net, १८ मई २०२२

निर्वासित तिब्बती सरकार के मंत्रियों साथ तिब्बती मुद्दों के लिए अमेरिका की विशेष समन्वयक उज़रा ज़ेया

धर्मशाला। तिब्बतियों ने बुधवार को तिब्बती मुद्दों के लिए अमेरिका की विशेष समन्वयक उजरा जेया और उनके साथ आए प्रतिनिधिमंडल के धर्मशाला में पहले आगमन पर जोरदार स्वागत किया।

अमेरिकी विशेष समन्वयक धर्मशाला में अपने दो दिवसीय कार्यक्रम के पहले चरण में केंद्रीय तिब्बती प्रशासन पहुंचीं। सिक्योंग पेन्पा छेरिंग के नेतृत्व में सीटीए के प्रतिनिधिमंडल ने अमेरिकी विदेश मंत्रालय के प्रतिनिधिमंडल का कशाग सचिवालय में स्वागत किया। यहां पर उनकी एक संक्षिप्त बैठक के बाद गंगचेन किइशोंग में कार्यालयों का दौरा होगा।
धर्मशाला में अपने प्रवास के दौरान विशेष समन्वयक ज़ेया परम पावन दलाई लामा से उनके आवास पर मुलाकात भी करेंगी।

विशेष समन्वयक की धर्मशाला यात्रा केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के सिक्योंग पेन्पा छेरिंग द्वारा पिछले महीने वाशिंगटन की सफल यात्रा के कुछ ही समय बाद हुई है, जहां सिक्योंग ने तिब्बती मुद्दों के लिए अमेरिकी विशेष समन्वयक के अलावा अमेरिकी कांग्रेस के निचले सदन हाउस ऑफ रिप्रेजेंटेटिव की स्पीकर नैन्सी पेलोसी, कांग्रेस में दोनों दलों के अन्य सांसदों और विदेश विभाग के अधिकारियों के साथ मुलाकात की थीं।

इससे पहले, सूचना और अंतरराष्ट्रीय संबंध विभाग (डीआईआईआर) कालोन नोरज़िन डोल्मा और डीआईआईआर के सचिव कर्मा चोयिंग ने फरवरी में अमेरिकी विदेश विभाग और कैपिटोल हिल पर एक सप्ताह की लंबी बैठक के लिए वाशिंगटन डीसी का दौरा किया था। डीआईआईआर कालोन और डीआईआईआर सचिव की उस यात्रा ने मई की शुरुआत में सिक्योंग की अमेरिका की अगली यात्रा का मार्ग प्रशस्त किया और अंततः तिब्बती मुद्दों के लिए अमेरिकी विशेष समन्वयक उजरा ज़ेया की धर्मशाला की यात्रा का मार्ग प्रशस्त हुआ।

फरवरी में अमेरिका यात्रा के दौरान डीआईआईआर कालोन नोरज़िन डोल्मा ने अमेरिकी विदेश विभाग में नागरिक, सुरक्षा, लोकतंत्र और मानवाधिकार (जे) की अवर सचिव और तिब्बती मुद्दों के लिए अमेरिका की विशेष समन्वयक उजरा जेया से मुलाकात की। उस समय अवर सचिव ज़ेया के साथ केंद्रीय तिब्बती प्रशासन की नेता की यह पहली व्यक्तिगत मुलाकात थी।

अवर सचिव जेया की धर्मशाला की यात्रा अमेरिकी विशेष समन्वयकों की यहां की यात्राओं के क्रम में छठी यात्रा है। जनवरी २००० में सहायक सचिव जूलिया टाफ्ट धर्मशाला का दौरा करने वाली पहली विशेष समन्वयक थीं। नवंबर २००६ में अमेरिकी अवर सचिव पाउला जे. डोब्रियन्स्की ने धर्मशाला का दौरा किया। २००९ में अवर सचिव मारिया ओटेरो (तब विशेष समन्वयक के रूप में सेवा करने के लिए नामित) धर्मशाला की यात्रा पर राष्ट्रपति बराक ओबामा के वरिष्ठ सलाहकार वैलेरी जैरेट के साथ आए थे। अवर सचिव सारा सिवाल ने २०१४ और २०१६ में धर्मशाला का दौरा किया था।

• लापता तिब्बती लेखक को चीन के किंघई प्रांत की जेल में होने की खबरें

गेंदुन ल्हुंद्रुप एक धार्मिक कार्यक्रम में शामिल होने के लिए जा रहे थे, जब उन्हें दिसंबर २०२० में गिरफ्तार किया गया।

rfa.org / सांग्याल कुंचोक, २४.०५.२०२२

तिब्बतियों ने अपने जानकारों से मिली सूचना के आधार पर कहा है कि वर्ष २०२० में गिरफ्तार किए जाने के बाद से एक साल से अधिक समय तक अज्ञात स्थान में रखे गए तिब्बती लेखक और कवि गेंदुन ल्हुंद्रुप को सिलिंग (चीनी, शीनिंग में) की एक जेल में हिरासत में रखा गया है।

निर्वासन में रह रहे एक तिब्बती ने आरएफए को पहले बताया था कि मल्हो (हुआंगनान) तिब्बती स्वायत्त प्रिफेक्चर के रेबगोंग (टोंगरेन) काउंटी स्थित रोंगवो मठ के ४७ वर्षीय पूर्व भिक्षु ल्हुंद्रुप को हिरासत में लेने से पहले उनकी राजनीतिक असंतोष भड़काने के मामले में अधिकारियों द्वारा निगरानी की गई थी। एक प्रत्यक्षदर्शी के अनुसार, अधिकारियों ने ल्हुंद्रुप को ०२ दिसंबर, २०२० को पश्चिमी चीन के किंघई प्रांत में उस समय गिरफ्तार किया जब वह रेबगोंग में एक धार्मिक वाद-विवाद में भाग लेने के लिए जा रहे थे। उन्हें चीनी पुलिस द्वारा चलाई जा रही एक काली कार के पिछले हिस्से में बिठा लिया गया था।

तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र में रहने वाले एक तिब्बती ने बताया, 'हमें पता चला है कि गेंदुन ल्हुंद्रुप जिसका अब तक पता नहीं चला है, उसे सिलिंग के एक हिरासत केंद्र में रखा गया है। हालांकि, उनके परिवार के सदस्यों को अभी भी उनसे मिलने की अनुमति नहीं है और न ही उसकी स्थिति के बारे में कोई जानकारी सामने आई है।'

सूत्र ने कहा कि ल्हुंद्रुप को कथित तौर पर राजनीतिक पुनर्शिक्षा कार्यक्रम में रखा गया है, जहां उसे तिब्बती बौद्ध लिपियों का मंदारिन चीनी में अनुवाद करना होगा। चीनी कम्युनिस्ट पार्टी चाहती है कि तिब्बती बौद्ध धर्म का अध्ययन विशेष रूप से चीनी भाषा कराया जाए।

निर्वासन में रह रहे एक दूसरे तिब्बती ने कहा कि चीनी अधिकारियों ने सितंबर २०२१ में फोन पर ल्हुंद्रुप के परिवार को बताया था कि लेखक के मुकदमे में जल्द ही सुनवाई शुरू की जाएगी। लेकिन उसके बाद से इस बारे में कुछ भी नहीं सुना गया है।

सूत्र ने कहा, 'ल्हुंद्रुप के एक करीबी सूत्र के अनुसार उसके मुकदमे के बारे में अभी भी कोई खबर नहीं है। लेकिन उसे एक विशेष हिरासत केंद्र में रखा जा रहा है, जहां उसकी जान को कोई खतरा नहीं है।'

२००८ में चीन के पश्चिमी प्रांतों में तिब्बत और तिब्बती क्षेत्रों में चीनी शासन के खिलाफ क्षेत्र-व्यापी विरोध प्रदर्शन के बाद चीनी अधिकारियों ने तिब्बती राष्ट्रीय पहचान और संस्कृति को बढ़ावा देने वाले तिब्बती लेखकों और कलाकारों को अक्सर हिरासत में लिया है, जिनमें से कई को लंबी जेल की सजा सुनाई गई है।

सूत्रों का कहना है कि हाल के वर्षों में राष्ट्रीय पहचान का दावा करने के तिब्बती प्रयासों के रूप में भाषा अधिकार

चीन के किंघई प्रांत की जेल में बंद तिब्बती लेखक गेंदुन ल्हुंद्रुप

विशेष मुद्दा बन गया है। इसीलिए चीनी सरकार द्वारा अनौपचारिक रूप से संगठित भाषा पाठ्यक्रमों को आम तौर पर 'अवैध संघ' माना जाता है और शिक्षकों को हिरासत में ले लिया जाता है या उनकी गिरफ्तारी हो जाती है।

अधिकारियों ने बौद्ध भिक्षुओं और भिक्षुणियों को तिब्बती के बजाय मंदारिन चीनी का उपयोग करने के आदेश भी जारी किए हैं।

सितंबर २०२१ में सरकारी अधिकारियों ने किंघई में एक धार्मिक सम्मेलन में निर्देश जारी कर तिब्बती बौद्ध मठों और अध्ययन केंद्रों को कक्षा के ग्रंथों का तिब्बती से चीन की 'सामान्य भाषा' मंदारिन चीनी में अनुवाद करने को कहा था। सूत्रों ने उस समय एक रिपोर्ट में आरएफए को बताया था।

भिक्षुओं और भिक्षुणियों से कहा गया था कि उन्हें अपनी मूल भाषा के बजाय चीनी भाषा में सीखना और बोलना चाहिए। यह नीति चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग के देश भर में धर्म के चीनीकरण करने के आह्वान का हिस्सा है।

• चीनी बिजली संयंत्र के लिए तिब्बतियों को जबरन विस्थापित किया गया

एक मठ और आसपास के गांव में रहने वाले तिब्बतियों को 'मुआवजा दिए बिना' स्थानांतरित करने का आदेश दिया गया है।

rfa.org / सांग्याल कुंचोक, १७.०५.२०२२

तिब्बती सूत्रों ने खबर दी है कि चीनी सरकार द्वारा बनाए जा रहे कि जलविद्युत परियोजना के लिए उत्तर-पश्चिमी चीन के किंघई प्रांत के एक तिब्बती गांव के निवासियों को जबरन अपने घरों से विस्थापित किया जा रहा है। पास के मठ में रहने वाले भिक्षुओं को भी मठ छोड़कर जाने के लिए कहा गया है।

इस सप्ताह क्षेत्र के एक तिब्बती निवासी ने आरएफए को बताया कि त्सोल्हो (चीनी-

हैनान) तिब्बती स्वायत्त प्रिफेक्चर स्थित अत्सोक गोन डेचेन चोईखोर लिंग मठ के भिक्षुओं ने इस सरकारी आदेश को वापस लेने के लिए चीनी अधिकारियों के पास याचिका दायर की है।

उत्तर-पश्चिमी चीन के किंघई प्रांत स्थित तिब्बती लेखक गेंदुन ल्हुंद्रुप का गांव

आरएफए के सूत्र ने सुरक्षा कारणों से नाम न छापने की शर्त पर कहा, 'लेकिन चीनी स्थानीय पर्यवेक्षक और अन्य अधिकारी तिब्बतियों के बीच जा रहे हैं और उन्हें मुआवजे की परवाह किए बिना स्थानांतरित करने की चेतावनी दे रहे हैं।'

सूत्र ने कहा, 'मठ के भिक्षुओं को भी बैठकों में बुलाया जा रहा है और स्थानांतरण के लिए सहमत होने का आदेश दिया गया है।'

आरएफए के सूत्र ने कहा कि दिसंबर २०२१ में परियोजना की व्यवहार्यता की जांच के बाद चीनी सरकार द्वारा माचू नामक कंपनी को बिजली संयंत्र के निर्माण का काम और उसकी देखरेख के लिए अधिकृत किया गया था।

डेचेन चोखोर लिंग मठ की स्थापना १८८९ में हुई थी और वर्तमान में यहां १५७ भिक्षु निवास करते है। सूत्रों के अनुसार, हालांकि २०२१ के बाद से मठ में १८ वर्ष से कम आयु के भिक्षुओं को रहने या अध्ययन करने की सरकार की ओर से मनाही है।

बार-बार गतिरोध

तिब्बती क्षेत्रों में चीनी विकास परियोजनाओं को लेकर तिब्बतियों ने लगातार गतिरोध पैदा किया है। तिब्बती लोग चीनी फर्मों और स्थानीय अधिकारियों पर भूमि को अनुचित रूप से अधिग्रहित करने और स्थानीय लोगों के जीवन यापन को दूभर बनाने का आरोप लगाते रहे हैं।

कई परियोजनाओं में विरोध को कुचलने के लिए हिंसक दमन का सहारा लिया जाता है और परियोजना मालिकों द्वारा लोगों को हिरासत में डाल दिया जाता है। स्थानीय आबादी पर सरकार की आज्ञाओं का पालन करने के लिए तीव्र दबाव डाला जाता है।

भारत के धर्मशाला स्थित एक गैर सरकारी संगठन 'तिब्बतन सेंटर फॉर ह्यूमन राइट्स एंड डेमोक्रेसी' ने बताया है कि तिब्बत में चीन के विकास अभियान ने इस क्षेत्र को बीजिंग के साथ आर्थिक और सांस्कृतिक एकीकरण के करीब ला दिया है।

इस तरह की परियोजनाएँ स्वयं तिब्बतियों को किसी तरह का लाभ पहुंचाने में विफल रही हैं। ग्रामीण तिब्बती अक्सर पारंपरिक चराई वाली भूमि से और शहरी क्षेत्रों में चले जाते हैं, लेकिन यहां की सबसे अच्छी नौकरियां हान मूल के चीनी नागरिकों को दी जाती हैं।

गिरती सेहत के कारण तिब्बती राजनीतिक कैदी की जेल से रिहाई

• नोरज़िन वांग्मो को २०२० में आत्मदाह करनेवाले एक तिब्बती के बारे में समाचार साझा करने के आरोप में तीन साल की जेल की सजा सुनाई गई थी।

rfa.org / सांग्याल कुंचोक, ०५.०५.२०२२

गिरती सेहत के कारण जेल से रिहा तिब्बती राजनीतिक कैदी नोरज़िन वांग्मो

तिब्बत में रहने वाले एक तिब्बती ने गुरुवार को आरएफए को बताया कि चीनी अधिकारियों ने तिब्बत की उस राजनीतिक कैदी नोरज़िन वांग्मो को रिहा कर दिया है, जिन्हें २०२० में गिरफ्तार किया गया था। वाग्मो को एक तिब्बती द्वारा आत्मदाह कर लिए जाने की खबर सार्वजनिक करने के आरोप में तीन साल की सजा सुनाई गई थी। उस तिब्बती ने चीन की दमनकारी नीतियों के विरोध में आत्मदाह कर लिया था।

तिब्बती सूत्र ने बताया कि 'नोरज़िन वांग्मो को ०२ मई को काइगुडो की जेल से अप्रत्याशित रूप से रिहा कर दिया गया, जहां वह तीन साल की सजा भुगत रही थी।' सुरक्षा कारणों से अपनी पहचान उजागर करने से इनकार करते हुए इस तिब्बती सूत्र ने बताया कि 'जेल में गंभीर यातना और बीमारी के उपचार में कमी के कारण वह मुश्किल से अपने पैरों पर खड़ी हो सकती है।'

सूत्र ने कहा, 'वर्तमान में उनका इलाज घर पर ही किया जा रहा है क्योंकि उन्हें इलाज के लिए अस्पतालों तक जाने की अनुमति नहीं है। चीनी सरकार द्वारा उसकी अभी भी बारीकी से निगरानी की जाती है।'

किंघई प्रांत के युशुल (चीनी- युशु) तिब्बती स्वायत्त प्रफिक्चर के खाम क्येगुडो की निवासी वांग्मो पर आरोप लगाया गया था कि उसने प्रीफेक्चर के ही चुमारलेब (कुमलाई) काउंटी में तेनज़िन शेरब द्वारा मई २०१३ में किए गए आत्मदाह के बारे में जानकारी सार्वजनिक कर दी थी।

वाग्मो शादीशुदा हैं और उसके तीन बच्चे हैं। उन्हें बहुत ही गुप्त तरीके से की गई सुनवाई के बाद मई २०२० में सजा सुनाई गई थी। उसके परिवार को लगातार अनुरोधों के बावजूद भी जेल में उनसे मिलने की अनुमति नहीं दी गई थी।

चीनी सरकार द्वारा लगाए गए तिब्बत में सख्त प्रतिबंध और कठोर नीतियों के कारण वांग्मो का मामला उनकी गिरफ्तारी के २० महीने बाद तक भी निर्वासित तिब्बती समुदाय तक नहीं पहुंचा।

इस मामले से अच्छी तरह से वाकिफ निर्वासन में रह रहे एक अन्य तिब्बती ने बताया कि 'गिरफ्तारी से पहले उनसे स्थानीय पुलिस द्वारा लगभग २० घंटे तक पूछताछ की गई थी।' सूत्र ने कहा, 'उसके हाथ और पैर दोनों बेड़ियों में जकड़े हुए थे और उसके परिवार को उन्हें जेल ले जाने से कुछ मिनट पहले ही उन्हें देखने की अनुमति दी गई थी। उनके परिवार के लोगों ने उनके लिए जो कपड़े और अन्य सामान लाए थे, वह भी वापस कर दिया गया था।'

• कनाडाई संसद की विदेश मामलों और अंतरराष्ट्रीय विकास पर स्थायी समिति ने सिक्योंग पेन्पा छेरिंग के अनुमोदन के बाद चीन-तिब्बत वार्ता का समर्थन करने वाले प्रस्ताव को पारित किया

tibet.net, ०६ मई २०२२

कनाडा की संसद में सिक्योंग पेम्पा छेरिंग

ओटावा। सिक्योंग पेन्पा छेरिंग की कनाडा यात्रा के दौरान मुख्य आकर्षण निश्चित रूप से वहां के हाउस ऑफ कॉमन्स की विदेश मामलों और अंतरराष्ट्रीय विकास पर स्थायी समिति के समक्ष उनकी पहली उपस्थिति रही। यहां उन्होंने तिब्बत संकट के बारे में विस्तार से बयान दिया, जिसमें पिछले २७ साल से लापता तिब्बत के ११वें पंचेन लामा से संबंधित मामला भी शामिल था। उनका अनुमोदन मिलने के बाद समिति ने तिब्बत मुद्दे के शांतिपूर्ण समाधान का समर्थन करने वाले एक प्रस्ताव को सर्वसम्मति से पारित कर दिया।

सिक्योंग के संबोधन से पहले सांसद आरिफ विरानी द्वारा सिक्योंग का सदन में औपचारिक रूप स्वागत किया गया और उनका परिचय कराया गया। विरानी ने ही सदन को बुनियादी मानवाधिकारों के लिए तिब्बती संघर्ष के मुद्दे को समर्थन करने के लिए प्रेरित किया।

गुरुवार ०५ मई को समिति के समक्ष अपने बयान में सिक्योंग ने तिब्बत से संबंधित मुद्दे के बारे में जोरदार विश्लेषण प्रस्तुत किया। उन्होंने पश्चिमी देशों को तिब्बत के बारे में चीन रचित इतिहास के अलावा अन्य स्रोतों से भी अध्ययन करने की जरूरत पर जोर दिया और कनाडा के नीति निर्माताओं से चीन के खिलाफ अधिक कानून और प्रतिबंधों के साथ आगे आने का आग्रह किया।

चीनी शासन में तिब्बत के भीतर राजनीतिक और मानवाधिकारों की गंभीर स्थिति पर प्रकाश डालते हुए सिक्योंग ने तिब्बती भाषा और संस्कृति के दमन पर चिंता व्यक्त की। भाषा दमन के मुद्दे पर सांसद गार्नेट जेनुइस के सवाल के जवाब में सिक्योंग ने चीनी शासन के तहत तिब्बती भाषा के क्षरण के मामले में शी जिनपिंग के नेतृत्व में माओत्से तुंग के नेतृत्व से भी बदतर स्थिति पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि वर्तमान शी सरकार के तहत तिब्बती भाषा को लेकर बहुत कम स्वतंत्रता है या यों कहा जाए कि कोई स्वतंत्रता है ही नहीं।

सिक्योंग ने कहा, 'जब शी जिनपिंग सत्ता में आए तो उन्होंने भाषा को लेकर तिब्बतियों को जो थोड़ी सी स्वतंत्रता प्राप्त थी, उसको भी ध्वस्त कर दिया। इसका कारण था कि उन्होंने 'एक चीन नीति' लागू की, जिसके तहत चीनी भाषा और संस्कृति के अलावा भाषा और संस्कृति के अध्ययन के लिए कोई जगह नहीं थी। स्कूलों और संस्थानों को शिक्षा का माध्यम तिब्बती से बदलकर चीनी भाषा करने के लिए मजबूर किया गया।'

अपनी गवाही में सिक्योंग पेन्पा छेरिंग ने पंचेन लामा के संबंध में टिप्पणी की कि परम पावन दलाई लामा द्वारा मान्यता प्राप्त गेधुन चोएक्यी न्यिमा को पंचेन लामा के रूप में मान्यता नहीं देकर चीन ने एक बड़ी सामरिक त्रुटि की है। उन्होंने कहा, 'अगर चीन ने ऐसा किया होता तो उनके पास तिब्बतियों द्वारा माने गए गेधुन चोएक्यी न्यिमा पंचेन लामा होते। न कि उनके द्वारा थोपा गया ऐसा लड़का जिसे न तो परम पावन दलाई लामा और न ही तिब्बतियों द्वारा मान्यता मिली हुई है।' उन्होंने कहा कि ११वें पंचेन लामा के ठिकाने और उनके सेहत की सच्चाई को छिपाने का चीन का मकसद दलाई लामा के पुनर्जन्म में हस्तक्षेप करने का तरीका है क्योंकि इसमें दलाई लामा और पंचेन लामा द्वारा एक-दूसरे को पारस्परिक मान्यता प्रदान करना शामिल है।

चीन-तिब्बत वार्ता को फिर से शुरू करने से संबंधित मुद्दे पर बोलते हुए सिक्योंग ने चीनी नेताओं से संपर्क करने के कई प्रयासों के बावजूद 'चीनी समकक्षों की ओर से कोई उत्तर न मिलने' के कारण बातचीत में गतिरोध आने का आरोप लगाया।

उन्होंने कहा, 'राष्ट्रपति शी के नेतृत्व में चीजें भयावह दिखती हैं, यहां तक कि निकट भविष्य में बातचीत की उम्मीद भी दूर की कौड़ी लगती है।' इसके साथ ही उन्होंने समिति से सर्वसम्मति से चीन-तिब्बत वार्ता को फिर से शुरू करने पर प्रस्ताव पारित करने का आग्रह किया।

गवाही के दौरान सिक्योंग के साथ ताशी ल्हुनपो मठ (पंचेन लामा की सीट) के मठाधीश ज़ीक्याब रिनपोछे थे, जिन्होंने गेधुन चोएक्यी न्यिमा के मामले पर कुछ आवश्यक बयान दिए और समिति के समक्ष पांच सूत्रीय अपील भी प्रस्तुत की और उम्मीद जताई कि वे अपीलों पर सकारात्मक रूप से विचार करेंगे।

ज़ीक्याब रिनपोछे द्वारा प्रस्तुत पाँच सूत्रीय अपील:

१ कनाडा सरकार चीन में राजदूत को ११वें पंचेन लामा से मिलने और उनके ठिकाने और कुशलक्षेम का पता लगाने के लिए आदेश दे और इस बारे में प्रस्ताव पारित करे।

२ कनाडा सरकार २७ वर्षों से जबरन गायब होने के पीड़ित ११वें पंचेन लामा को सम्मानित करे। इसके साथ ही कनाडा ऐसे किसी भी व्यक्ति को सम्मानित करे जिसे उनके मानवाधिकारों, धार्मिक स्वतंत्रता, बाल अधिकारों और आवागमन, निवास और अन्य मौलिक अधिकारों से वंचित किया गया है।

३ उनकी शीघ्र रिहाई के लिए और उनकी स्थिति की ओर ध्यान आकर्षित करने के लिए कनाडा की संसद से ११वें पंचेन लामा का जन्मदिन मनाने की अपील की जाती है।

४ ताशी ल्हुनपो मठ के एक लामा जाड्रेल रिनपोछे की रिहाई के लिए सक्रिय रूप से आह्वान किया जाए, जो ११वें पंचेन लामा के साथ-साथ कई अन्य तिब्बती राजनीतिक कैदियों की खोज समिति के प्रमुख थे। तिब्बत में विकट स्थिति के कारण विरोध करने के लिए तिब्बती आत्मदाह के कृत्यों का सहारा ले रहे हैं। नवीनतम आत्मदाह का मामला इसी साल २५फरवरी को २५ वर्षीय तिब्बती गायक छेवांग नोरबू और २७ मार्च को ८१ वर्षीय ताफून का हैं। तिब्बत की गंभीर स्थिति की ओर संयुक्त राष्ट्र सहित अंतरराष्ट्रीय समुदाय का ध्यान आकर्षित करने के लिए कम से कम १५७ तिब्बतियों ने अपने सबसे कीमती जीवन का बलिदान दिया है। इसलिए, कनाडा सरकार से उनकी अपीलों पर सकारात्मक प्रतिक्रिया देने का आग्रह किया जाता है।

५ तिब्बत में तिब्बतियों की आकांक्षा है कि परम पावन दलाई लामा जल्द से जल्द तिब्बत लौटें। इसलिए कनाडा सरकार से परम पावन दलाई लामा और केंद्रीय तिब्बती प्रशासन का समर्थन लिए के लिए ठोस पहल करने पर विचार करने की अपील की जाती है ताकि पारस्परिक रूप से लाभकारी मध्यम मार्ग के माध्यम से चीन-तिब्बत संघर्ष के समाधान को सक्षम बनाया जा सके।

• न्यूयॉर्क में युवा तिब्बतियों और पेशेवरों ने सीटीए की वोलेंटियरली तिब्बत एडवोकेसी इनिशिएटिव (स्वैच्छिक तिब्बत पैरवी पहल) पर चर्चा की

tibet.net, ०३ मई २०२२

न्यूयॉर्क। न्यूयॉर्क और उसके आसपास रहने वाले तिब्बती युवाओं और युवा पेशेवरों के लिए ०१ मई २०२२ को न्यूयॉर्क स्थित तिब्बती सामुदायिक केंद्र के हॉल में वोलेंटियरली तिब्बत एडवोकेसी ग्रुप (स्वैच्छिक तिब्बत पैरवी समूह) द्वारा एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। 'तिब्बती युवाओं और युवा पेशेवरों का सिक्योंग के साथ बातचीत (इंटरेक्शन विद सिक्योंग: तिब्बतन यूथ्स एंड यंग प्रोफेशनल्स)' पहल के तहत आयोजित इस कार्यक्रम में तिब्बती आंदोलन में युवाओं की भागीदारी के महत्व पर प्रकाश डाला गया और इस बात पर चर्चा की गई कि तिब्बती युवा तिब्बती आंदोलन में कैसे योगदान दे सकते हैं।

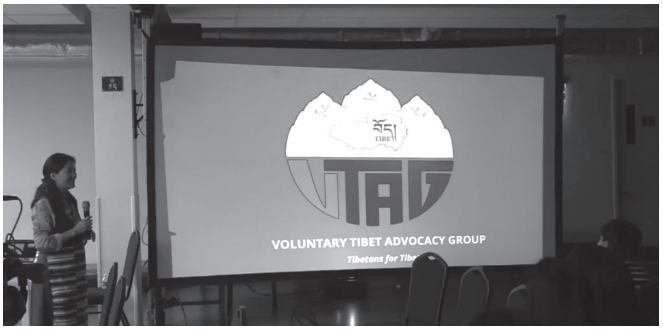

न्यूयॉर्क में सीटीए की वोलेंटियरली तिब्बत एडवोकेसी इनिशिएटिव की बैठक में युवा तिब्बती और पेशेवर

वोलेंटियरली तिब्बत एडवोकेसी ग्रुप या वी-टैग की शुरुआत १६वें कशाग द्वारा की गई है। इसका प्राथमिक उद्देश्य तिब्बत के व्यापक उद्देश्य के लिए प्रत्येक तिब्बती को अपने तरीके से योगदान करने के लिए एक मंच प्रदान करके दुनिया भर में मौजूदा पैरवीकारी अभियानों को मजबूत करना है। इसे पिछले साल ०६ नवंबर को ज्यूरिख में केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के सिक्योंग पेन्पा छेरिंग द्वारा लॉन्च किया गया था।

कार्यक्रम में सूचना और अंतरराष्ट्रीय संबंध विभाग में तिब्बत पैरवीकारी अनुभाग के प्रमुख दुक्थेन क्यी ने तिब्बती युवाओं को वोलेंटियरली तिब्बत एडवोकेसी इनिशिएटिव के बारे में बताया। उन्होंने व्यापक प्रस्तुति के माध्यम से वी-टैग पहल के प्रमुख पहलुओं का वर्णन किया। इसमें इसके लक्ष्य, इसकी जरूरत और वी-टैग सदस्यों के साथ-साथ इसमें शामिल पक्षों की भूमिकाएं और जिम्मेदारियों के बारे में समझाया गया।

दुक्थेन क्यी ने विशेष रूप से अमेरिका और कनाडा में वी-टैग के कामकाज पर चर्चा की। उन्होंने इन देशों में नए कार्यक्रम के साथ और अधिक तिब्बती युवाओं को पंजीकृत कराने की आवश्यकता पर बल दिया। युवा श्रोताओं ने पूरी प्रस्तुति को ध्यान से सुना।

वी-टैग पर युवाओं की भागीदारी के बारे में चर्चा के बाद सिक्योंग पेन्पा छेरिंग ने १९४८ में व्यापार प्रतिनिधिमंडल द्वारा अमेरिका के साथ तिब्बत के पहले राजनीतिक संबंधों और इसके बाद सीआईए की सहायता से चीनियों के खिलाफ विद्रोह के लिए निर्वासित तिब्बतियों के प्रशिक्षण की ऐतिहासिक कहानी सुनाई। सिक्योंग ने तिब्बत को लेकर अमेरिका के न्युयार्क स्थित संयुक्त राष्ट्र के १९५९, १९६१ और १९६५ के तीन प्रस्तावों की व्याख्या की और तिब्बत और संयुक्त राष्ट्र के बीच राजनीतिक संबंधों पर युवा तिब्बतियों का ज्ञानवर्द्धन किया।

इसके अलावा सिक्योंग ने युवाओं से तिब्बत के मुद्दे पर अमेरिकी सरकार का समर्थन हासिल करने की परम पावन दलाई लामा की कड़ी मेहनत और दृढ़ता को याद रखने का आग्रह किया। सिक्योंग ने बताया कि तिब्बतियों के लिए अमेरिका का वर्तमान समर्थन १९७९ में दलाई लामा की अमेरिका की पहली यात्रा के बाद मिला। इसके बाद के दशकों में उन्होंने अमेरिका की कई यात्राएं कीं, जिसमें अमेरिकी सरकार के विभिन्न गवर्नरों के साथ उनके मैत्रीपूर्ण संबंध मजबूत हुए।

सिक्योंग ने अमेरिका में तिब्बतियों की सीमित संख्या, बहुत कम समर्थन और कमजोर आधार के बावजूद अंतरराष्ट्रीय संगठनों का ध्यान अपनी ओर आकर्षति करने में पहले के तिब्बतियों द्वारा किए गए प्रयासों की सराहना की। उनका मानना है कि तिब्बती युवाओं के समन्वित प्रयासों को शामिल करने वाली एक समयबद्ध लॉबी उपयोगी साबित होगी और तिब्बत के लिए उपयोगी परिणाम दिलाएगी। उन्होंने इसके साथ ही वोलेंटियरली तिब्बत एडवोकेसी इनिशिएटिव को आगे बढ़ाने में तिब्बती युवाओं की भागीदारी और समर्थन का स्वागत किया।

सिक्योंग ने युवाओं को अपने अंतिम संदेश में कहा कि वे अच्छी तरह से शोध किए गए लेखों और पुस्तकों को पढ़कर तिब्बत के बारे में खुद को शिक्षित करें, ताकि वे तिब्बत पर चर्चा करते समय आत्मविश्वास से बोल सकें। इसके अलावा, उन्होंने उनसे चीन-तिब्बत संघर्ष को आगे बढ़ाने के लिए अपने प्रयासों में समन्वय स्थापित करने का आग्रह किया।

कनाडा में अपने आधिकारिक कार्यक्रमों के अंतिम चरण में सिक्योंग ने एमपीपी भूटीला करपोछे से मुलाकात की

tibet.net, १० मई २०२२

टोरंटो। कनाडा में अपने आधिकारिक कार्यक्रम के अंतिम चरण में सिक्योंग पेन्पा छेरिंग ने 'ओंटारियो पॉर्लियामेंटरी फ्रेंड्स ऑफ तिब्बत' की अध्यक्ष एमपीपी भूटीला कारपोचे से मुलाकात की।

सोमवार को बातचीत के बाद पार्कडेल-हाई पार्क जाती हुई एमपीपी ने ट्वीट किया कि वह केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के सिक्योंग से मिलकर सम्मानित महसूस कर रही हैं। उन्होंने कहा, 'उनका ओंटारियो में तिब्बती समुदाय के घर पार्कडेल में स्वागत करना अद्भुत अनुभव था।'

सिक्योंग ने भी यही भावना व्यक्त की और ट्वीट किया कि उन्हें तिब्बती युवाओं के लिए निरंतर प्रेरणा का काम करनेवाली

ओंटारियो पॉर्लियामेंटरी फ्रेंड्स ऑफ तिब्बत' की अध्यक्ष और कनाडा की एमपीपी भूटीला करपोछे से मुलाकात के दौरान सिक्योंग पेम्पा छेरिंग

और अपने अनुकरणीय कार्य के साथ नेतृत्व करने वाली एमपीपी भूटीला करपोछे पर गर्व है।
सिक्योंग ने ट्वीट किया, 'तिब्बतन हेरिटेज मंथ ऐक्ट पारित कराने के साथ ही उनके कार्य और उनकी पहल ऐसे कार्य हैं जो दिखाता है कि यह प्रभाव तिब्बती अपने अंदर पैदा कर सकते हैं। आज उनसे मिलकर खुशी हुई।'

एमपीपी करपोछे ने सीटीए में बैठक के दौरान प्रतिनिधि डॉ नामग्याल चोएडुप, सीटीए के प्रवक्ता तेनजिन लेक्षय और सीटीए के प्रतिनिधियों से भी मुलाकात की।

• जेएनयू की कुलपति और प्रशासकों से मिले शिक्षा कालोन व सचिव

tibet.net, ०२ मई २०२२

धर्मशाला। सीटीए के शिक्षा विभाग की कालोन थरलाम डोल्मा चांगरा और सचिव जिग्मे नामग्याल ने २८ अप्रैल को जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू) की कुलपति प्रो. शांतिश्री डी. पंडित से मुलाकात की।
कुलपति के साथ बातचीत के दौरान दोनों पक्षों ने फीस वृद्धि के बाद जेएनयू में तिब्बती छात्रों के सामने आने वाली समस्याओं पर चर्चा की। साथ ही साथ प्रशासकों को जेएनयू से उत्तीर्ण हुए तिब्बती स्नातकों के बारे में सूचित किया गया। ये स्नातक सीटीए के विभिन्न विभागों, जेएनयू और दुनिया भर में विभिन्न संगठनों में काम कर रहे हैं।

जेएनयू की कुलपति शांतिश्री डी. पंडित के साथ सीटीए के शिक्षा विभाग की कालोन थरलाम डोल्मा चांगरा और सचिव जिग्मे नामग्याल

शिक्षा कालोन ने आगे उल्लेख किया कि जेएनयू में पढ़ने वाले तिब्बती छात्र मुख्य रूप से भारत में तीसरी और चौथी पीढ़ी के तिब्बती हैं, जिनकी स्कूली शिक्षा सीबीएसई से संबद्ध तिब्बती स्कूलों में पूरी हुई है। इसलिए, तिब्बती छात्रों की वित्तीय स्थिति अन्य अंतरराष्ट्रीय छात्रों के बराबर नहीं हो सकती है। इसलिए उन्होंने विश्वविद्यालय के प्रशासकों से तिब्बती छात्रों की समस्या को समझने का अनुरोध किया।
इसके अलावा, शिक्षा कालोन और सचिव ने संभूता स्कूलों के निदेशक के साथ केन्द्रीय विद्यालय संगठन (केवीएस) के आईआईएस आयुक्त निधि पांडे और उनके सहयोगियों से भी मुलाकात की और २७ अप्रैल को सीटीएसए के तहत पहले तिब्बती स्कूलों के लिए धन प्राप्त करने पर चर्चा की। उन्होंने दोनों संस्थानों के बीच समझौता करने के बारे में भी बातचीत की।
भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय ने केंद्रीय तिब्बती स्कूल प्रशासन (सीटीएसए) द्वारा संचालित तिब्बती स्कूलों को सीटीए के शिक्षा विभाग के माध्यम से संभूता तिब्बती स्कूल सोसायटी (एसटीएसएस) को सौंप दिया था। केवीएस की स्थापना १९६३ में हुई थी और वर्तमान में भारत में केवीएस के तहत १२४५ स्कूल हैं।

• राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग की सदस्य श्रीमती रिनचेन ल्हामो की शिलांग की आधिकारिक यात्रा

tibet.net, ०७ मई २०२२

शिलांग। राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग की माननीय सदस्य श्रीमती रिनचेन ल्हामो ने शिलांग का आधिकारिक दौरा किया। उमरोई हवाई अड्डे पर उनके आगमन पर तिब्बती बंदोबस्त अधिकारी श्री पेमा धोंडुप और निर्वासित तिब्बती संसद की सांसद सुश्री छेरिंग डोल्मा, तिब्बती बौद्ध मठ के उपाध्याय भिक्षु न्गवांग पाल्डेन, शिलांग बौद्ध संघ के सचिव श्री अरूप और अन्य गणमान्य लोगों द्वारा उनका गर्मजोशी से स्वागत किया गया।
श्रीमती रिनचेन ल्हामो ने मेघालय के माननीय राज्यपाल श्री सत्यपाल मलिक जी से शिष्टाचार भेंट की और उनको बधाई दी एवं अभिनंदन किया। साथ ही, उन्होंने अल्पसंख्यकों के लिए कल्याणकारी योजनाओं के बारे में जागरूकता पैदा करने और उनकी शिकायतों के निवारण के लिए माननीय राज्यपालके गहन दृष्टिकोण के लिए उनकी भूरि-भूरि प्रशंसा की।
उन्होंने महामहिम आर्कबिशप विक्टर लिंगदोह के साथ दर्शकों के बीच पहुंचीं और मैरीज हेल्प कैथेड्रल का दौरा किया। उन्होंने विभिन्न धार्मिक समुदायों के प्रमुखों से मुलाकात की। उन्होंने राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग के उद्देश्यों के साथ ही अल्पसंख्यकों के हितों की रक्षा के लिए चलाई जा रही विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं पर भी प्रकाश डाला।
श्रीमती रिनचेन ल्हामो ने तिब्बती बंदोबस्त कार्यालय का दौरा किया और तिब्बती समुदाय के साथ बातचीत की। उन्होंने अपनी भाषा, संस्कृति के संरक्षण और अपनी पहचान बनाए रखने की दिशा में कड़ी मेहनत के लिए तिब्बती समुदाय की सराहना की। इसके अलावा, उन्होंने पुष्टि की कि समिति अल्पसंख्यकों की शिकायतों के निवारण और उनके कल्याण के लिए हरसंभव तरीके से काम करने के लिए प्रतिबद्ध है।

शिलांग की आधिकारिक यात्रा के दौरान वहां के राज्यपाल श्री सत्यपाल मलिक के साथ राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग की सदस्य श्रीमती रिनचेन ल्हामो

• तिब्बती छात्र तेनज़िन येशी को २०२२ का 'सर्वश्रेष्ठ युवा वैज्ञानिक' पुरस्कार मिला

tibet.net, ३१ मई २०२२

मॉस्को। तेनज़िन येशी एक तिब्बती एमडी छात्र हैं जो पूर्व सोवियत संघ के किर्गिस्तान गणराज्य के बिश्केक शहर में एशियाई चिकित्सा संस्थान में पढ़ रहे हैं। उन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा टीसीवी सुजा और हाई स्कूल टीसीवी बाइलाकुप्पे से पूरी की।

स्कूली शिक्षा पूरी करने के बाद तेनज़िन येशी ने किर्गिस्तान में एशियाई चिकित्सा संस्थान में प्रवेश लिया। उन्हें २०२२ के 'सर्वश्रेष्ठ युवा वैज्ञानिक' पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। इससे पहले वह पूर्व सोवियत गणराज्य के २०२१ के 'अग्रणी शोध छात्र पुरस्कार' से सम्मानित हो चुके हैं।

भारत में तेनज़िन येशी ने २०१५ में कक्षा- १२ के छात्रों बीच वार्षिक तिब्बती निबंध प्रतियोगिता में पहला स्थान हासिल किया और २०२० में 'हार्वर्ड मेडिकल स्कूल ऑन फार्माकोलॉजी एंड इम्यूनोलॉजी' से उन्हें 'एचिवमेंट डिग्री' से सम्मानित किया गया। उन्होंने विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) से विज्ञान और चिकित्सा में उनके योगदान और डब्ल्यूएचओ द्वारा आयोजित कार्यक्रमों में भागीदारी के लिए कई अन्य उपलब्धियां और प्रशंसा प्रमाण-पत्र भी मिल चुके हैं।

तेनज़िन येशी तिब्बतन एडिटर मेंबर के पूर्व छात्र हैं और २०१४ से २०१६ तक टीसीवी बाइलाकुप्पे में छात्र परिषद के सदस्य रहे हैं। वह किर्गिज़ गणराज्य के एशियाई चिकित्सा संस्थान में भी अकादमिक प्रदर्शन में लगातार अव्वल रहे हैं।

किर्गिज़ गणराज्य के शिक्षा मंत्री से २०२२ का 'सर्वश्रेष्ठ युवा वैज्ञानिक' पुरस्कार प्राप्त करते तिब्बती छात्र तेनज़िन येशी

• भारत-तिब्बत समन्वय संघ का विशेष प्रतिनिधिमंडल राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद से मिला

tibet.net, ०५ मई २०२२

नई दिल्ली। भारत-तिब्बत समन्वय संघ (बीटीएसएस) के केंद्रीय संयोजक श्री हेमेंद्र सिंह तोमर के नेतृत्व में एक विशेष प्रतिनिधिमंडल ने भारत के माननीय राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद से मुलाकात की। इस बैठक के दौरान प्रतिनिधिमंडल ने भारत-तिब्बत समन्वय संघ के कार्यों और लक्ष्यों के बारे में महामहिम को जानकारी दी और उसके कार्यों पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर प्रतिनिधिमंडल द्वारा महामहिम को सात सूत्री ज्ञापन सौंपा गया। बीटीएसएस के केंद्रीय संयोजक श्री हेमेंद्र सिंह तोमर ने बारी-बारी से सभी प्रस्तावों को महामहिम को पढ़कर सुनाया और अपने उद्देश्यों को स्पष्ट किया।

इस बैठक के दौरान महामहिम ने सभी प्रस्तावों को ध्यान से सुना, साथ ही यह आश्वासन भी दिया कि जो प्रस्ताव जिस विभाग से संबंधित होंगे, उसे संबंधित विभाग को भेजे जाने चाहिए। उन्होंने कहा कि इनमें से कुछ प्रस्ताव गृह मंत्रालय से संबंधित हैं और कुछ प्रस्ताव रक्षा मंत्रालय से संबंधित हैं, इसलिए वह अपनी सिफारिशें संबंधित मंत्रालयों को भेजेंगे।

माननीय राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद को स्मृति चिन्ह भेंट करता बीटीएसएस का विशेष प्रतिनिधिमंडल

महामहिम भारत-तिब्बत समन्वय संघ के काम के बारे में पहले से वाकिफ हैं और उन्होंने २५ मिनट की बैठक के दौरान तिब्बत और कैलाश के मुद्दे पर चर्चा करते हुए जन जागरूकता पैदा करने के लिए एक जन आंदोलन खड़ा करने और युवा शक्ति को आगे लाने का सुझाव दिया। उन्होंने कहा कि संघ का यह कार्य बहुत बड़े उद्देश्यों के साथ चल रहा है, जिसमें यह और भी अच्छा है कि इसका नेतृत्व राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के एक वरिष्ठ प्रचारक और भाजपा के पूर्व संगठन सचिव और पूर्व राज्यपाल प्रो. कप्तान सिंह सोलंकी कर रहे हैं।

ज्ञापन में कहा गया है कि भारत की संसद के दोनों सदनों ने १४ नवंबर १९६२ को एक प्रस्ताव पारित किया था कि चीन द्वारा धोखे से कब्जा की गई भूमि का हर हिस्सा वापस ले लिया जाएगा। महामहिम को सौंपे गए सात सूत्री ज्ञापन में यह मांग की गई है कि अब ६० साल बाद केंद्र की इस मजबूत सरकार को उपरोक्त संकल्प को पूरा करने की दिशा में ठोस कदम उठाना चाहिए।

यह मांग भी की गई है कि भारत सरकार अब चीन से बात करके कैलाश-मानसरोवर तीर्थयात्रियों का कोटा बढ़ाने का प्रयास करे ओर चीनी सरकार द्वारा वसूले जाने वाले शुल्क की प्रतिपूर्ति इन तीर्थयात्रियों को कर दे।

अगली मांग में कहा गया कि भारत की तत्कालीन सरकार और चीन की कम्युनिस्ट सरकार के बीच १९९३ और १९९६ में हुए समझौते को रद्द कर दिया जाए, क्योंकि दोनों समझौतों में भारतीय सेना को चीनी सेना के सामने निहत्था रहने के लिए बाध्य किया गया है। तिब्बत सीमा पर चीनी सैनिकों को तैनात किया जाना वास्तव में भारतीय

सेना के साथ विश्वासघात है।

ज्ञापन में तिब्बती चिकित्सा के संबंध में कहा गया कि भारत को देश के लोगों को स्वास्थ्य लाभ को मान्यता देने वाली प्रभावी तिब्बती चिकित्सा प्रणाली को भी आश्रय देना चाहिए और इसे आयुष में शामिल करके तिब्बती परिवारों से सरकार को होने वाली आय का सृजन करना चाहिए।

एक अन्य मांग में कहा गया कि तिब्बत सीमा की मान्यता और पहचान को अक्षुण्ण रखने के लिए केवल भारत-तिब्बत सीमा लिखी और बोली जानी चाहिए, न कि भारत-चीन सीमा। क्योंकि इतिहास में चीन कभी भारत का पड़ोसी देश नहीं रहा और न ही उससे हमारी कोई सीमा मिलती रही है।

इसके अलावा संगठन के शुभचिंतक रहे दिवंगत रज्जू भैया और परम पावन दलाई लामा को भारत रत्न दिए जाने और तिब्बतियों को भारतीय नागरिकता देने की भी मांग की गई।

भारत-तिब्बत समन्वय संघ की ओर से महामहिम को एक स्मृति चिन्ह, बीटीएसएस की पत्रिका शिवबोधि, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह पर लिखी गई एक पुस्तक, तिब्बत के समकालीन महत्व को उकेरने वाली एक पुस्तक, खटक, शिवजी के शरीर का चिताभस्म, फूल और रुद्राक्ष की माला भी उन्हें प्रदान की गई।

इस विशेष प्रतिनिधिमंडल में बीटीएसएस के केंद्रीय संयोजक श्री हेमेंद्र तोमर, राष्ट्रीय महासचिव श्री अरविंद केसरी और श्री विजय मान, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री अजीत अग्रवाल, राष्ट्रीय अध्यक्ष युवा श्री नीरज सिंह और राष्ट्रीय सचिव श्री नरेंद्र सिंह चौहान शामिल थे।

• बीटीएसएम दिल्ली प्रांत ने भारत-तिब्बत सहयोग मंच का २३वां स्थापना दिवस मनाया

tibet.net, ०७ मई २०२२

दिल्ली के कश्मीरी गेट इलाके में महाराजा अग्रसेन पार्क स्थित वैश्य बी.एस. अग्रवाल हॉल में भारत-तिब्बत सहयोग मंच के २३वें स्थापना दिवस समारोह को संबोधित करते डॉ. इंद्रेश कुमार

दिल्ली। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के वरिष्ठ प्रचारक और भारत- तिब्बत सहयोग मंच (बीटीएसएम) के मार्गदर्शक माननीय डॉ इंद्रेश कुमार के निर्देशन में भारत-तिब्बत सहयोग मंच की दिल्ली इकाई ने वैश्य बी एस अग्रवाल हॉल, महाराजा अग्रसेन पार्क, कश्मीरी गेट, दिल्ली में गुरुवार, ०५ मई २०२२ को मंच का २३वां स्थापना दिवस मनाया।

इस अवसर पर डॉ. इंद्रेश कुमार ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि जब ०५ मई १९९९ को धर्मशाला में मंच की स्थापना हुई थी, उस समय तिब्बत की स्वतंत्रता के बारे में सोचा भी नहीं जा सकता था। उस समय तिब्बत की आज़ादी की बात करना नामुमकिन सा लगता था, लेकिन आज मुझे यह कहते हुए बहुत गर्व हो रहा है कि धर्मशाला से उठकर आज तिब्बत की आज़ादी की माँग पूरी दुनिया में फैल गई है। तिब्बत की चर्चा पूरी दुनिया में हो रही है और भारत-तिब्बत सहयोग मंच ने इस काम को अंजाम देने का काम किया है। उन्होंने कहा कि २३ साल का सफर अपने आप में एक बड़ी उपलब्धि है। मंच के कार्यकर्ताओं को यह जानने की जरूरत है कि तिब्बत कभी चीन का हिस्सा नहीं था और चीन कभी भी भारत का स्वाभाविक मित्र नहीं था। चीन को समुद्र से लगती कोई जमीन नहीं मिली। चीन ने सुरक्षा के लिए खुद को दीवार में कैद कर लिया था। दीवार के बाहर का उसका कोई भी क्षेत्र अवैध है। उस पर चीन का अवैध कब्जा है।

डॉ. इंद्रेश कुमार ने आगे कहा कि चीन ने कोरोना फैलाकर बहुत पाप किया है। इसने पूरी दुनिया को संकट में डाल दिया, लेकिन इसने आज तक दुनिया के सामने खेद भी नहीं जताया। उन्होंने जोर देकर कहा, 'अगर चीन को सबक सिखाया जाना है, तो चीनी सामानों का बहिष्कार सबसे अच्छा और आसान उपाय है। इस तरह के उपाय से उसकी कमर ही टूट जाएगी। जब चीन आर्थिक रूप से बहुत कमजोर होगा तो तिब्बत भी आजाद होगा और कैलाश-मानसरोवर भी आजाद होगा। मंच के कार्यकर्ता अपने मिशन में लगे रहें। एक दिन आपको अवश्य ही सफलता मिलेगी।'

कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित तिब्बती निर्वासित संसद (टीपीईई) के सांसद श्री कुंचोक यांगपेल ने कहा कि मंच के २३ वर्षों का कार्यकाल बहुत अच्छा रहा है। एक दिन जरूर आएगा जब मंच के प्रयासों से तिब्बत और कैलाश-मानसरोवर आजाद होंगे, साथ ही सुरक्षा की दृष्टि से भारत भी आश्वस्त होगा। माननीय इंद्रेश कुमार जी के मार्गदर्शन में मंच बहुत अच्छा काम कर रहा है। उन्होंने मंच को बधाई दी और सभी सदस्यों को शुभकामनाएं दीं।

अन्य विशिष्ट अतिथि विश्व हिंदू परिषद (विहिप) के राष्ट्रीय संयुक्त सचिव और राष्ट्रीय प्रवक्ता श्री विजय शंकर तिवारी ने कहा कि किसी भी कार्य का संकल्प लेना अपने आप में एक बड़ी बात है। माननीय इन्द्रेश कुमार जी के नेतृत्व में धर्मशाला में २३ वर्ष पहले जो संकल्प लिया गया था, वह आज भारत ही नहीं पूरे विश्व में फैल गया है। जैसे पहले लोग सोचते थे कि क्या हम कभी ब्रिटिश शासन से मुक्त होंगे, लेकिन दृढ़ संकल्प के सामने अंग्रेजों को भारत छोड़ना पड़ा और देश आजाद हो गया। इसी तरह तिब्बत चीन से आजाद होगा और हमें तिब्बत की आजादी का जश्न मनाने का मौका जरूर मिलेगा।

कार्यक्रम में मुख्य वक्ता बीटीएसएम के राष्ट्रीय महासचिव श्री पंकज गोयल ने कहा कि माननीय इंद्रेश जी के मार्गदर्शन में धर्मशाला से जो मिशन शुरू हुआ है, यह और भी आगे बढ़ता रहेगा। भारत के साथ-साथ विदेशों में भी इस अभियान को और तेज किया जाएगा। धर्मशाला में होने वाले रजत जयंती उत्सव से पहले ५०० जिलों में मंच की इकाइयां बनाकर तिब्बत की आजादी और कैलाश-मानसरोवर मुक्ति अभियान को घर-घर तक पहुंचाया जाएगा। श्री गोयल ने कहा कि आज पूरी दुनिया में कोई भी देश चीन पर भरोसा नहीं करता जबकि भारत पर सभी देश भरोसा करते हैं। धूर्त और पापी चीन के नापाक मंसूबों से देश और दुनिया को अवगत कराने के लिए मंच अपने अभियान को तेज करेगा।

सैम्यलिंग तिब्बती बस्ती, मजनुं का टीला के बंदोबस्त अधिकारी श्री दोरजी ने केंद्रीय तिब्बती प्रशासन और सभी तिब्बतियों की ओर से मंच को इसके २३वें स्थापना दिवस पर बधाई दी। उन्होंने माननीय डॉ. इंद्रेश कुमार के मार्गदर्शन में पिछले २३ वर्षों से तिब्बत के

लिए किए जा रहे कार्यों के लिए बीटीएसएम को धन्यवाद और आभार व्यक्त किया। श्री दोरजी ने मंच को अपनी शुभकामनाएं दीं और तिब्बती हित के लिए उनके अभियान में मदद और समर्थन का भरोसा दिलाया।

तिब्बती युवा कांग्रेस के अध्यक्ष श्री गोंपो धुंडुप ने कहा कि परम पावन दलाई लामा हमेशा कहते हैं कि भारत और तिब्बत के बीच गुरु और शिष्य का संबंध है। अनादि काल से दोनों देशों के बीच सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और पारिवारिक संबंध रहे हैं। जब तिब्बत आजाद होगा तो कैलाश-मानसरोवर अपने आप आजाद हो जाएगा। दोनों देशों के बीच संबंध पहले की तरह हो जाएंगे।

इस अवसर पर बीटीएसएम इंद्रप्रस्थ क्षेत्र के संयोजक श्री सूर्यभान पांडेय, आरटीडब्ल्यूए मजनुं का टीला की अध्यक्ष श्रीमती फुर्बु डोल्मा सहित अन्य वक्ताओं ने अपने विचार व्यक्त किए।

कार्यक्रम की अध्यक्षता बीटीएसएम दिल्ली के अध्यक्ष श्री अजय भारद्वाज ने की और महासचिव श्रीमती संजना चौधरी ने कार्यक्रम का संचालन किया।

कार्यक्रम में बीटीएसएम राष्ट्रीय पदाधिकारी, दिल्ली प्रांत के पदाधिकारी, बीटीएसएम कार्यकर्ता, सैम्यलिंग तिब्बती बस्ती, मजनुं का टीला के प्रतिनिधि और आईटीसीओ कर्मचारी उपस्थित रहे।

• समिति अधिकारी उज्जवल पंत ने निर्वासित तिब्बती संसद का दौरा किया

tibet.net, १७ मई २०२२

निर्वासित तिब्बती संसद में भारतीय संसद पुस्तकालय के समिति अधिकारी श्री उज्ज्वल पंत के साथ डिप्टी स्पीकर डोल्मा छेरिंग तेखंग।

धर्मशाला। भारतीय संसद पुस्तकालय के समिति अधिकारी श्री उज्ज्वल पंत ने १६ मई, २०२२ को निर्वासित तिब्बती संसद का दौरा किया। श्री पंत का संसदीय सचिवालय में डिप्टी स्पीकर डोल्मा छेरिंग तेखांग ने अपने कक्ष में स्वागत किया और तिब्बत के वर्तमान महत्वपूर्ण मुद्दे और तिब्बती इतिहास के बारे में सामान्य जानकारी दी। समिति अधिकारी को डिप्टी स्पीकर द्वारा निर्वासित तिब्बती संसद के विकास, संरचना और कामकाज के बारे में भी जानकारी दी गई और उन्हें तिब्बत को लेकर लिखी गई पुस्तकें भेंट की गईं।

तिब्बती इतिहास में गहरी रुचि रखनेवाले श्री उज्ज्वल पंत तिब्बत के मुद्दे पर चिंतित हैं। उन्होंने आने वाले महीनों में निर्वासित तिब्बती संसद में अधिक से अधिक भारतीय संसद सदस्यों का दौरा कराने को लेकर अपनी ओर से पूरी कोशिश करने का आश्वासन दिया। उन्होंने तिब्बत के मुद्दों और निर्वासित तिब्बती संसद पर भी कई प्रश्न पूछे जिनका डिप्टी स्पीकर ने विधिवत उत्तर दिया।

समिति अधिकारी को तिब्बत संग्रहालय और तिब्बती कार्य और अभिलेखागार पुस्तकालय (एलटीडब्ल्यूए) जाने से पहले संसद में ले जाया गया।

• ठोक्यो में 'ए गोल्डन वीक तिब्बत फेस्टिवल जापान' का आयोजन

tibet.net, ०९ मई २०२२

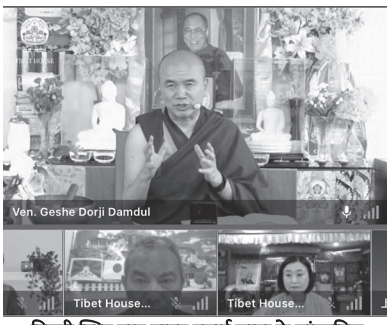

दिल्ली स्थित परम पावन दलाई लामा के सांस्कृतिक केंद्र, तिब्बत हाउस के निदेशक गेशे दोरजी दामदुल

टोक्यो। जापान स्थित तिब्बत हाउस ने ०१ से ०७ मई तक पांच दिवसीय ऑनलाइन 'तिब्बत महोत्सव जापान' का आयोजन किया। जापान में सप्ताह भर चलने वाले गोल्डन वीक को वहां पड़नेवाले अवकाश के दिनों में रखा गया। जापान में परम पावन दलाई लामा के प्रतिनिधि डॉ. छेवांग ग्याल्पो आर्य ने अपने उद्घाटन भाषण में कहा कि इस उत्सव का उद्देश्य तिब्बत की समृद्ध धार्मिक और सांस्कृतिक विरासत का परिचय देना और तिब्बत को अटूट समर्थन देने के लिए जापान की सरकार और लोगों के प्रति गहरा आभार व्यक्त करना है। उन्होंने आगे कहा कि यह तिब्बतियों और जापानियों को एक-दूसरे की समृद्ध संस्कृति को साझा करने और आध्यात्मिक और सांस्कृतिक संबंध को मजबूत करने का अवसर भी देता है।

उत्सव के पहले दिन की शुरुआत प्रतिनिधि डॉ. आर्य द्वारा 'तिब्बत का इतिहास और संस्कृति' पर व्याख्यान के साथ हुई। उन्होंने अपने भाषण ने एसईई लर्निंग यानि सोशल, इमोशनल और एथिकल लर्निंग के महत्व पर भी प्रकाश डाला। इस लर्निंग में शिक्षा के सभी स्तरों पर नैतिकता को अधिक शांतिपूर्ण और करुणामय दुनिया बनाने के लिए एक नींव के रुप में महत्व दिया गया है।

अगले तीन दिन तक दिल्ली स्थित परम पावन दलाई लामा के सांस्कृतिक केंद्र, तिब्बत हाउस के निदेशक गेशे दोरजी दामदुल द्वारा बौद्ध धर्म का परिचय पढ़ाया गया और इसकी शिक्षाओं पर बातचीत की गईं। भिक्षु गेशे ला के प्रवचन में तीन विषय शामिल थे:

नव प्रशिक्षुओं के लिए ध्यान और भावनात्मक प्रबंधन
चार आर्य सत्य और तनाव प्रबंधन
पथ के तीन प्रमुख पहलू (लमत्सो नम्सुम)

गेशे दोरजी दामदुल ने क्याबद्रो (शरण प्रार्थना) का पाठ करके अपने भाषण की शुरुआत की और प्रतिभागियों ने अनुशरण करते हुए जापानी भाषा में उसी पाठ को दोहराया। तीन दिवसीय सत्र में सभी प्रतिभागियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। प्रश्नोत्तर सत्र के दौरान प्रतिभागियों ने बौद्ध प्रथाओं और उनके दैनिक जीवन से संबंधित चीजों के बारे में प्रश्न उठाए। गेशे-ला ने इन प्रश्नो का संतोषजनक उत्तर दिया। प्रतिभागियों ने ध्यान और श्वास की साधना को सबसे अधिक सहायक बताया और तिब्बत हाउस से भविष्य में भी इस तरह के कार्यक्रम आयोजित करने का अनुरोध किया।

समारोह के अंतिम दिन तिब्बती मक्खन चाय, पाग (चाय और मक्खन के साथ भुना हुआ जौ का आटा) और थेंटुक (नूडल्स) बनाने का प्रदर्शन किया गया। इसके अलावा तिब्बती और जापानी कलाकारों द्वारा ऑनलाइन पोस्ट किए गए गीतों को प्रतिभागियों के साथ साझा किया गया। सैन फ्रांसिस्को से छेरिंग बावा, स्विट्ज़रलैंड से लोटेन नेमलिंग, ऑस्ट्रेलिया से तेनज़िन चोग्याल, टोक्यो से नोडा मेगुमी, दक्षिण कोरिया से खड़ग पेन्पा, नागानो के तेनज़िन कुनसांग और जेनयान तेनज़िन ने पारंपरिक और आधुनिक तिब्बती गीतों से दर्शकों का मन मोह लिया।

डॉ. आर्य ने ऑनलाइन उत्सव को सफल बनाने के लिए प्रतिभागियों और स्वयंसेवकों को धन्यवाद दिया और प्रतिभागियों से वादा किया कि तिब्बत हाउस समय-समय पर प्रतिभागियों के अनुरोध के अनुसार इस तरह के कार्यक्रम आयोजित करेगा। कार्यक्रम का संचालन सुश्री हसेगावा और सोनम डोलकर ला ने किया।

• चिली के पांच सांसदों ने ११वें पंचेन लामा की तत्काल रिहाई की अपील की

tibet.net, १७ मई २०२२

गेधुन चोएक्यी न्यिमा के लापता होने की २७वीं वर्षगांठ के अवसर पर चिली के पांच सांसदों-व्लाडो मिरोसेविक, लुइस मल्ला, सेबेस्टियन विडेला, एलेजांद्रो बर्नलेस और एना गज़मुरी ने तिब्बत के ११वें पंचेन लामा की तत्काल रिहाई के लिए एक अपील पत्र जारी किया। नीचे अपील-पत्र का हिन्दी अनुवाद है।

तिब्बत के ११वें पंचेन लामा १७ मई १९९५ से गायब हैं-

हम परम पावन दलाई लामा द्वारा तिब्बत के १०वें पंचेन लामा के अवतार के रुप में मान्यता प्राप्त गेधुन चोएक्यी न्यिमा के लापता होने की वर्षगांठ के अवसर पर उस अंतरराष्ट्रीय आह्वान में शामिल होते हैं जो उनके ठिकाने और स्थिति जानने के साथ ही उसकी तत्काल रिहाई की मांग करता है।

१९९५ में ११वें पंचेन लामा के रुप में मान्यता पाने के बाद छह वर्षीय गेधुन चोएक्यी न्यिमा तब अपने माता-पिता के साथ तिब्बत में अपने मूल स्थान नक्चू से गायब हो गए थे और तब से उन्हें नहीं देखा गया है। चीनी अधिकारियों ने स्वीकार किया है कि उन्होंने उन्हें हिरासत में लिया है। हालांकि उनकी गोपनीयता के नाम पर वे यह बताने से इनकार करते हैं कि वह कहाँ है।

संयुक्त राष्ट्र के संगठन, विभिन्न देशों की सरकारें, गैर-सरकारी संगठन और आम जनता अब तक उस युवक के बारे में समाचार प्राप्त करने की नाकाम कोशिशें करती रही है जो अब ३३ वर्ष के हो चुके हैं।

हम इस महत्वपूर्ण मुद्दे के स्पष्टीकरण के प्रति चौकस हैं और हमें विश्वास है कि उनकी रिहाई में और देरी नहीं होगी।

• तिब्बत के लिए जर्मन संसदीय समूह ने चीन से तिब्बत के ११वें पंचेन लामा को रिहा करने का आह्वान किया

tibet.net, १८ मई २०२२

जिनेवा। तिब्बत के ११वें पंचेन लामा गेधुन चोएक्यी न्यिमा और उनके परिवार के अपहरण के २७ साल पूरे होने पर तिब्बत के लिए जर्मन संसदीय समूह ने उनकी सेहत और ठिकाने का पता लगाने के लिए अपनी आवाजें फिर से उठानी शुरू कर दी हैं। संसदीय समूह ने चीन से तिब्बत के ११वें पंचेन लामा की नजरबंदी और तिब्बती लोगों की धार्मिक स्वतंत्रता पर हमलों को समाप्त करने का आह्वान किया है।

चीन ने छह साल के बच्चे गेधुन चोएक्यी न्यिमा को अगवा कर जघन्य अपराध किया है। इससे भी बदतर बात यह है कि दुनिया को बच्चे के वास्तविक स्थिति के बारे में पता नहीं है कि वह जीवित है या नहीं? तिब्बत के लिए जर्मन संसदीय समूह के अध्यक्ष माननीय माइकल ब्रांड एमडीबी ने प्रेस बयान में कहा, 'यह निर्धारित करने के लिए कोई विश्वसनीय जानकारी नहीं है कि ११वें पंचेन लामा गेधुन चोएक्यी न्यिमा जीवित हैं।'

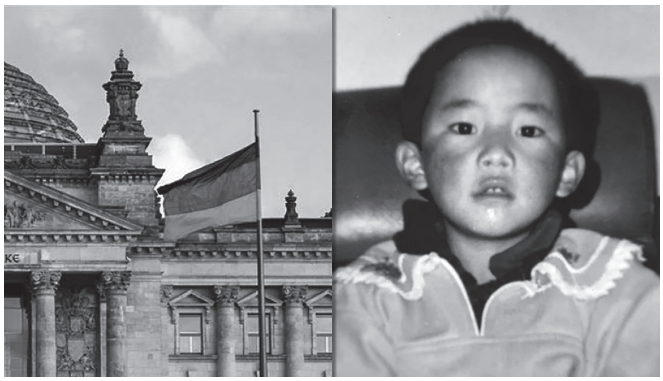

१७ मई १९९५ से गायब ११वें पंचेन लामा गेधुन चोएक्यी न्यिमा

गेधुन चोएक्यी न्यिमा के भाग्य के बारे में अधिकृत जानकारी प्रदान करने से चीन के निरंतर इनकार पर प्रकाश डालते हुए माननीय माइकल ब्रांड ने ठोस कार्रवाई का आह्वान किया कि 'दुनिया इसे देखने का प्रयास नहीं कर सकती कि (तिब्बत के ११वें पंचेन लामा का अपहरण) चीन द्वारा बिना प्रतिक्रिया के किए जा रहे अपराध का हिस्सा है।

• ऑस्ट्रेलिया तिब्बत काउंसिल ने 'ओवरकमिंग ऑब्स्टेकल: प्रोटेक्टिंग तिब्बतन रिलिजियस आइडेंटिटी (बाधाओं पर काबू: तिब्बती धार्मिक पहचान की रक्षा)' शीर्षक से तिब्बती धार्मिक पहचान पर व्यवस्थित हमले पर नई रिपोर्ट जारी की

tibet.net, २० मई २०२२

कैनबरा। ११वें पंचेन लामा गेधुन चोएक्यी न्यिमा के जबरन गायब होने की २७ वीं वर्षगांठ पर ऑस्ट्रेलिया तिब्बत परिषद (एटीसी) ने १७मई को 'ओवरकमिंग ऑब्स्टेकल: प्रोटेक्टिंग तिब्बतन रिलिजियस आइडेंटिटी (बाधाओं पर काबू: तिब्बती धार्मिक पहचान की रक्षा)' शीर्षक से तिब्बती धार्मिक पहचान पर प्रणालीगत हमले पर अपनी नई रिपोर्ट सिडनी स्थित एनएसडब्ल्यू स्टेट पॉर्लियामेंट में जारी की।

सिक्योंग पेन्पा छेरिंग ने इस अवसर पर एक वीडियो संदेश भेजा जिसमें ११वें पंचेन लामा के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए ऑस्ट्रेलिया तिब्बत परिषद, एनएसडब्ल्यू राज्य विधायिका और तिब्बती समुदाय के सदस्यों को धन्यवाद दिया गया। ११वें पंचेन लामा का १९९५ में छह साल की छोटी उम्र में चीनी अधिकारियों द्वारा अपहरण कर

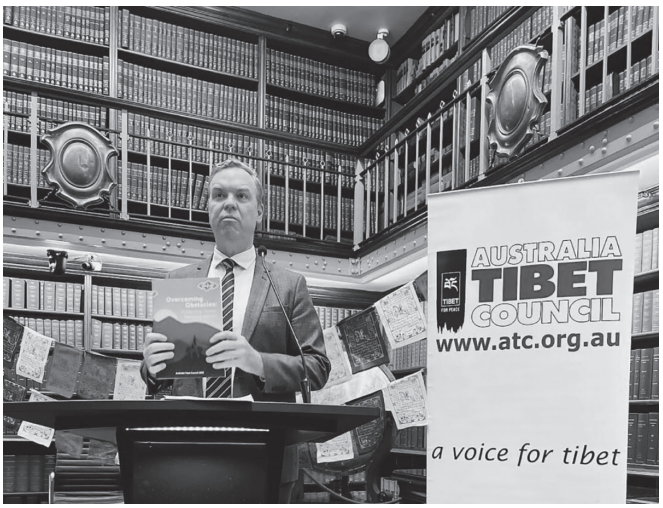

एनएसडब्ल्यू लेजिस्लेटिव असेंबली की सदस्य माननीया जेमी पार्कर

लिया गया था। उन्होंने कहा, 'पंचेन लामा का जबरन गायब किया जाना कई अन्य तिब्बती राजनीतिक कैदियों के मामलों की एक बानगी भर है, जो विभिन्न जेलों में यातना और कैद काट रहे हैं। इसलिए, हम अंतरराष्ट्रीय समुदाय से पंचेन रिनपोछे गेधुन चोएक्यी न्यिमा के बारे में अधिक जागरूकता पैदा करने और विश्व समुदाय से पंचेन रिनपोछे के ठिकाने और उनकी सेहत के बारे में बताने और उन्हें धार्मिक नेतृत्व वापस करने के लिए चीनी सरकार पर दबाव डालने में मदद करने का अनुरोध करना हैं, जिसके लिए ही वह पैदा हुए हैं।'

एनएसडब्ल्यू लेजिस्लेटिव असेंबली की सदस्य माननीया जेमी पार्कर ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड और दक्षिण-पूर्व एशिया के लिए परम पावन दलाई लामा के प्रतिनिधि कर्मा सिंगे और एनएसडब्ल्यू के तिब्बती समुदाय के साथ इस महत्वपूर्ण रिपोर्ट को जारी करने में शामिल हुईं। यह रिपोर्ट तिब्बती बौद्ध धर्म को नष्ट करने और बौद्ध धर्म का चीनीकरण करने के चीनी कम्युनिस्ट पार्टी (सीसीपी) के प्रयासों को रेखांकित करती है।

प्रतिनिधि कर्मा सिंगे ने तिब्बती धार्मिक पहचान पर चीनी सरकार के हमले पर रिपोर्ट लाने के लिए ऑस्ट्रेलिया तिब्बत परिषद के प्रति आभार प्रकट किया।
उन्होंने इस नई रिपोर्ट के महत्व पर जोर देते हुए कहा, 'यह व्यापक रिपोर्ट न केवल तिब्बत के अंदर की वास्तविक स्थिति के बारे में जागरूकता बढ़ाएगी, बल्कि ऑस्ट्रेलियाई सरकार से तिब्बत में चीनी सरकार की दमनकारी नीतियों पर नीतिगत स्थिति अपनाने का आग्रह करने के लिए एक शक्तिशाली सिफारिश के रूप में भी काम करेगी।'

उन्होंने आगे ऑस्ट्रेलियाई नेताओं, तिब्बत समर्थक समूहों और तिब्बत के मित्रों को धन्यवाद दिया, जो तिब्बत के न्यायसंगत मुद्दों का समर्थन करना जारी रखे हुए हैं। उन्होंने कहा, 'तिब्बती लोगों की दुर्दशा के बारे में आपकी समझ और आपका निरंतर समर्थन हमें अपना संघर्ष जारी रखने के लिए प्रोत्साहित करता है और हमें भविष्य के लिए आशा की किरण प्रदान करता है।'

एक पूर्व तिब्बती राजनीतिक कैदी और गु-चू-सम आंदोलन के पूर्व अध्यक्ष येशी टोगडेन ने जेल में चीनी सरकार के प्रति अपने प्रतिरोध और तिब्बत में हो रहे मानवाधिकारों के हनन के बारे में बात की।
कार्यक्रम का समापन एनएसडब्ल्यू तिब्बती समुदाय के दो युवा तिब्बतियों द्वारा गाए गए एकता गीत और चीनी कैद से ११वें पंचेन लामा की लंबी उम्र और तत्काल रिहाई के लिए प्रार्थना के साथ हुआ।

• संयुक्त राष्ट्र की मानवाधिकार प्रमुख को अति निगरानी में कराई जानेवाली झिंझियांग की यात्रा से बहुत कम उम्मीदें

उग्युर, तिब्बती और चीनी कार्यकर्ताओं को डर है कि मिशेल बाचेलेठ अधिकारों के हनन के खिलाफ चीन पर कार्रवाई करने में विफल हो जाएंगी।

rfa.org / मिया पिंग-चीह चेन, यितोंग वू, चिंगमैन और अलीम सीटॉफ
२३.०५.२०२२

संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार उच्चायुक्त श्रीमती मिशेल बाचेलेट

संयुक्त राष्ट्र की मानवाधिकार प्रमुख ने मानवाधिकार समूहों और उग्युर कार्यकर्ताओं की निराशा और गुस्से के बीच सोमवार को चीन के लिए उड़ान भरीं। उन्होंने जाते समय राजनयिकों से कहा कि इस सप्ताह झिंझियांग की उनकी यात्रा कोई 'जांच' नहीं होगी। जिस तरह का माहौल दिख रहा है, उसमें इस प्रयास की उम्मीदें बहुत ही क्षीण हैं।
ब्लूमबर्ग न्यूज एजेंसी के अनुसार, संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार उच्चायुक्त मिशेल बाचेलेट चीन पहुंचीं और १०० के करीब प्रतिभागियों के साथ वीडियो कॉल कीं। इनमें ज्यादातर बीजिंग स्थित राजनयिक थे। उन्होंने प्रतिभागियों का नाम लिए बिना बताया कि इस यात्रा से उच्च स्तर की उम्मीदें करना निराशाजनक होगा।
चिली की पूर्व राष्ट्रपति बाचेलेट २००५ के बाद से चीन की यात्रा करने वाली पहली अधिकार प्रमुख हैं। उनकी इस यात्रा से इस बात की चिंता जताई जा रही है कि इस यात्रा का उपयोग सत्तारूढ़ चीनी कम्युनिस्ट पार्टी (सीसीपी) द्वारा अपने अधिकारों के रिकॉर्ड को पाक-साफ करने और वैध बनाने के लिए किया जाएगा।
एमनेस्टी इंटरनेशनल के महासचिव एग्नेस कैलामार्ड ने कहा, 'मिशेल बाचेलेट की झिंझियांग की यात्रा क्षेत्र में मानवाधिकारों के उल्लंघन को उजागर करने का एक महत्वपूर्ण अवसर है, लेकिन यह सच्चाई को छिपाने के चीनी सरकार के प्रयासों के खिलाफ लड़ाई भी होगी।'
उन्होंने एक बयान में कहा, 'संयुक्त राष्ट्र को इसके खिलाफ कदम उठाने चाहिए और चीन द्वारा इस यात्रा का इस्तेमाल खुले तौर पर अपने प्रचार का समर्थन करने के लिए किए जाने का विरोध करना चाहिए।'
वाशिंगटन स्थित कंपेन फॉर उग्युर नामक संगठन ने कहा- 'चीन द्वारा इस ऐतिहासिक यात्रा को अपनेप्रचार दौरे में बदलना गलती होगी जो मानवाधिकारों के लिए

उच्चायुक्त के कार्यालय की प्रतिष्ठा को धूमिल करेगी और चीन के हाथों नरसंहार का सामना करने वाले उग्युरों को केवल संघर्ष के भरोसे हो जाने के लिए अकेला छोड़ देगी।'

चीनी विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता वांग वेनबिन ने कहा कि जाहिरा तौर पर कोविड-१९संक्रमण के जोखिम को देखते हुए बाचेलेट 'बंद लूप' में यात्रा करेंगी। इसका अर्थ होगा कि वह चीनी अधिकारियों द्वारा पूर्व- निर्धारित लोगों की सूची के बाहर किसी से भी नहीं मिल पाएंगी। .

वांग ने कहा कि २३-२८ मई की यात्रा के दौरान कोई भी पत्रकार उनके साथ यात्रा नहीं कर पाएगा।

ह्यूमन राइट्स वॉच में चीन की निदेशक सोफी रिचर्डसन ने ट्वीट किया, 'बेशक चीन सरकार अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और प्रेस के प्रति असहिष्णु है। वह कभी नहीं चाहेगी कि संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार प्रमुख एम बाचेलेट के साथ कोई पत्रकार यात्रा करे। लेकिन क्या संयुक्त राष्ट्र ने इस मुद्दे पर चीन से चर्चा करने की कोशिश की? मानवाधिकार, लोकतंत्र का प्रतिनिधित्व करने वाले किसी भी व्यक्ति को इस तरह की गलती नहीं करनी चाहिए।

अधिकार कार्यकर्ता ने लंबे समय से चेतावनी दे रहे हैं कि चीनी नीति निर्धारकों द्वारा इस क्षेत्र में घटित हो रही घटनाओं की सही तस्वीर देखने से बाचेलेट को रोक दिया जाएगा, जिसमें उग्युरों को नजरबंदी शिविरों के नेटवर्क में रखने और चीनी कारखानों में जबरन श्रम के रूप में इस्तेमाल किए जाने की रिपोर्ट शामिल है।

'प्रतीकात्मक यात्रा'

संयुक्त राष्ट्र ने पिछले सप्ताह कहा था कि अपनी २३-२८ मई की यात्रा के दौरान बाचेलेट चीन के दक्षिणी शहर ग्वांगझू और झिंझियांग के शहरों- उरुमकी (चीनी, वुलुमुकी) और काशगर (काशी) में रुकने के दौरान उच्च स्तरीय सरकारी अधिकारियों, शिक्षाविदों और नागरिक समाज समूहों और व्यवसायों के प्रतिनिधियों से मिलेंगी।

'वर्ल्ड उग्युर कांग्रेस (डब्ल्यूयूसी)' के अध्यक्ष डोलकुन ईसा ने कहा, 'हमें यह जानकर बहुत निराशा हुई है कि संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार उच्चायुक्त मिशेल बाचेलेट पूर्वी तुर्केस्तान में उग्युर लोगों के खिलाफ नरसंहार की जांच नहीं करने जा रही हैं। इसकी बजाये वह केवल चीन की इच्छा के अनुसार प्रतीकात्मक यात्रा भर करेंगी।' पूर्वी तुर्केस्तान झिंझियांग के लिए उग्युरो का पसंदीदा नाम है।

जर्मनी स्थित ईसा ने आरएफए को बताया, 'हमने बार-बार उच्चायुक्त बाचेलेट को आगाह किया है कि इस तरह की यात्रा संयुक्त राष्ट्र की विश्वसनीयता के लिए अत्यधिक हानिकारक होगी और इस यात्रा के दौरान वह केवल नरसंहार के आरोप से चीन को पाक-साफ करने के लिए चीनी सरकार के हाथों में खेलेंगी।'

चीन विशाल पश्चिमी क्षेत्र में अपनी सुरक्षा और विकास नीतियों पर राजनीतिक रूप से प्रेरित हमलों के रूप में सभी नरसंहार और जबरन श्रम के आरोपों को देखता है और गुस्से में इस तरह के दावों को खारिज करता है। बीजिंग ने बाचेलेट की 'दोस्ताना' यात्रा का आह्वान किया है।

उग्युर झिंझियांग में मानवाधिकारों की स्थिति को लेकर ओएचसीएचआर, जिनेवा में बाचेलेट के कार्यालय पर रिपोर्ट जारी करने का दबाव डाल रहे हैं, जो सितंबर से विलंबित है।

साधारण चीनी नागरिकों ने भी अमेरिकी अधिकार प्रमुख पर जेल में बंद प्रियजनों के मामलों को उठाने के लिए दबाव डाला है।

जब किसी ने सत्तारूढ़ सीसीपी नेता शी जिनपिंग की बेटी की तस्वीर को एक वेबसाइट पर पोस्ट किया तो एक व्यक्ति की मां को जेल में डाल दिया गया और कथित तौर पर प्रताड़ित किया गया। उन्होंने अपने इस मामले को दक्षिणी प्रांत ग्वांगडोंग के अधिकारियों को देखने के लिए कहा है।

नीयू की मां कोको ने आरएफए को बताया, 'मैंने सुना है कि सुश्री बाचेलेट इस सप्ताह गुआंगझोउ जा रही हैं, और (मेरे बेटे) नीउ तेंग्यू और २४ अन्य युवाओं से जुड़े मामले में गलत तरीके से न्याय भी यहां ग्वांगडोंग में हुआ था। मुझे उम्मीद है कि सुश्री बाचेलेट ग्वांगडोंग के अधिकारियों से न्याय की इस गलती को रद्द करने और नीउ तेंग्यू समेत अन्य सभी युवाओं को रिहा करने का आह्वान करेंगी।'

उन्होंने कहा, 'मुझे उम्मीद है कि वह इस मामले को देश के नेताओं के सामने लाएगी और ग्वांगडोंग में हुई इस गलत को ठीक करने का आग्रह करेंगी।'

बीजिंग स्थित मानवाधिकार के वकील यू वेन्शेंग ने ट्वीट किया कि वह चीन में मानवाधिकार की स्थिति के बारे में उन्हें जानकारी देने के लिए उत्सुक हैं, हालांकि उनके पास तक पहुंचने की संभावना बहुत कम है।

फेलो राइट्स अटॉर्नी वांग यू ने बाचेलेट को चीन के कुछ मानवाधिकार वकीलों से मिलने के लिए बुलाया और जेल में बंद वकीलों- ली युहान, चांग वेपिंग, डिंग जियाक्सी और किन योंगपेई के बारे में पूछताछ की।

चल रहे कथानकों को नियंत्रित करना

कार्यकर्ताओं का समूह 'स्टूडेंट्स फॉर फ्री तिब्बत' के लंदन स्थित अभियान निदेशक पेमा डोल्मा ने कहा कि पारदर्शिता की कमी ने पूरी यात्रा को संदिग्ध बना दिया है।

उन्होंने कहा, 'यदि उन्हें कोई इस तरह का संकेत मिलता है कि उनकी यात्रा चीनी सरकार के यात्रा (चीनी सरकार द्वारा लागू) प्रतिबंधों के तहत चल रहा है तो क्या उच्चायुक्त तुरंत अपनी यात्रा समाप्त कर देंगी? उन्होंने कहा, 'मुझे लगता है कि इस मामले में 'नहीं' कहना ज्यादा सुरक्षित उत्तर होगा।'

बाचेलेट ने इस सप्ताह २२० मानवाधिकार संगठनों के आह्वान के बावजूद यात्रा किया हैं। इन संगठनों ने इस महीने की शुरुआत में एक संयुक्त बयान में उनसे अपनी यात्रा रद्द करने के लिए अनुरोध किया था। लेकिन इस बयान का कोई जवाब नहीं मिला।

पेमा डोल्मा ने कहा, 'चीन की अपारदर्शी यात्रा करना और एक रिपोर्ट लिखना जो नागरिक समाज की मानवाधिकार कथानक चिंताओं के बजाय चीनी सरकार की चिंताओं को उजागर करती है, वास्तव में शी जिनपिंग की इच्छा का हिस्सा है।'

विदेश-स्थित अधिकार समूह ने कहा, बाचेलेट भी तियानमेन नरसंहार की राजनीतिक रूप से संवेदनशील वर्षगांठ से ठीक पहले ही आ रही हैं।

चीनी मानवाधिकार रक्षकों (सीएचआरडी) के एक समूह ने बाचेलेट की यात्रा से पहले एक खुले पत्र में कहा, 'आपकी यात्रा १९८९ के तियानमेन नरसंहार की ३३वीं वर्षगांठ की पूर्व संध्या पर हो रही है।' यह घटना शांतिपूर्ण प्रदर्शनकारियों के खिलाफ भयानक राज्य हिंसा का एक कार्य था, जिसके लिए कोई जवाबदेही तय नहीं की गई है। चीनी कम्युनिस्ट पार्टी सेंसरशिप, धमकियों और जेल के माध्यम से चल रहे अभियान के दौरान भूलने की बीमारी को दफनाने के लिए दृढ़ संकल्प है।'

बयान में कहा गया है, 'हम आपको तियानमेन के माताओं से उनके भाग्य के बारे में पूछताछ करने के लिए कहते हैं। पीड़ितों की माताओं और रिश्तेदारों का एक समूह ०४ जून, १९८९ के तुरंत बाद गठित किया गया था। यह समूह अपने बेटों और बेटियों के 'गायब होने' के लिए जवाबदेही की मांग कर रहे हैं।'

इसने कहा गया है कि बाचेलेट की यात्रा ने अधिकार कार्यकर्ताओं के बीच यह आशंका पैदा कर दी थी कि इसे 'चीनी सरकार द्वारा सावधानी से प्रबंधित और कोरियोग्राफ किया जाएगा ताकि आप केवल वही देख और सुन सकें जो सरकार आपको दिखाना और सुनाना चाहती है।'

चीनी मानवाधिकार बचाव कार्यकर्ताओं ने बाचेलेट की यात्रा से पहले एक खुले पत्र में कहा है कि हम चिंतित हैं कि पीड़ितों, चश्मदीदों, नागरिक समाज के स्वतंत्र सदस्यों तक आपकी कोई निर्बाध पहुंच नहीं होगी और यदि आप कमी के बारे में बोलते हैं तो आपकी आवाज़ें खामोश कर दी जाएंगी और चीनी सरकार द्वारा आपके सार्थक और निरंकुश पहुंच के विचारों को विकृत कर दिया जाएगा।'

पत्र में बाचेलेट को तियानमेन पीड़ित माताओं और उनके 'लापता' बच्चों के साथ खड़े होने और उग्युर और तिब्बती क्षेत्रों, हांगकांग और शेष चीन में उन सभी 'लापता' लोगों के लिए बोलने का आह्वान किया।

एमनेस्टी के कॉलमार्ड ने कहा, छह दिवसीय यात्रा में बाचेलेट 'झिंझियांग में मानवता के खिलाफ अपराधों को देखेंगी और इनकी सरसरी तौर पर समीक्षा करे सकेंगी।'

लेकिन कम से कम बाचेलेट की यात्रा को चीन की कार्रवाई के पीड़ितों पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। उग्युर और अन्य मुस्लिम जिन्हें निशाना बनाया गया है और विदेशों में कई परिवार जो यह नहीं जानते हैं कि उनके रिश्तेदार कहां हैं और न्याय, सच्चाई का अनुपालन ठीक कैसे करें।

• युवा तिब्बतियों को निशाना बना रहा चीन

taipeitimes.com, १२ मई २०२२, डोल्मा छेरिंग

तिब्बत में हाल में दो और आत्मदाह के दुखद मामले सामने आए हैं। दोनों ने तिब्बती समुदाय के भीतर और चीनी मीडिया के खिलाफ गुस्सा भड़का दिया है।

पहले मामले में २५फरवरी को छेवांग नोरबू नामके विख्यात तिब्बती गायक ने आत्मदाह कर लिया। नोरबू के मामले ने कई सवालों को जन्म दिया, लेकिन सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इसने चीनी सरकार के विरोध में आत्मदाह कर लेने के जनसांख्यिकीय महत्व के बारे में चिंता बढ़ा दी।

छेवांग नोरबू केवल २५ वर्ष के थे और राष्ट्रीय और क्षेत्रीय गायन रियलिटी शो की एक शृंखला में प्रदर्शन करने के बाद उनके पास एक आशाजनक भविष्य था। उनके सिना वीबो अकाउंट पर लगभग ६,००,००० फॉलोवर थे। वह २० के दशक में चीनी सरकार और उसकी नीतियों के विरोध में आत्मदाह करने वाले १०५वें तिब्बती बने।

विभिन्न स्रोतों से उपलब्ध आंकड़ों के आधार पर कहा जा सकता है कि १९९८ से इस वर्ष तक आत्मदाह के १५९ मामलों में से आत्मदाह करनेवाले १०५ तिब्बती १५ से २० वर्ष की आयु के थे।

आंकड़े बताते हैं कि आत्मदाह करने वालों में बड़ी संख्या युवाओं का है और उसने १९५९ के तिब्बत पर चीन के क्रूर सैन्य कब्जे, १९५८ के ग्रेट लीप फॉरवर्ड, १९६० के दशक की सांस्कृतिक क्रांति और १९८० के दशक के मार्शल लॉ का अनुभव नहीं किया था।

हालांकि, उन्होंने २००८ का विरोध के साथ ही बाद के वर्षों में सुरक्षा निगरानी और धार्मिक दमन की पराकाष्ठा देखी होगी। वे उस समय पैदा हुए थे जिसे चीनी सरकार ने 'आगे विकास के स्वर्ण युग की महान छलांग' कहा था।

उनमें से कई चीनी सरकार के खिलाफ निर्वासित तिब्बती सरकार के प्रचार से भी अवगत नहीं थे। इसलिए एक प्रासंगिक प्रश्न जो पूछा जाना चाहिए कि आत्मदाह करनेवालों की इतनी बड़ी संख्या के निहितार्थ क्या हैं?

इस विशेष प्रश्न का उत्तर जानने के लिए इन युवा प्रदर्शनकारियों की जनसांख्यिकीय विशेषताओं, उनके व्यवसाय, उनकी चिंताएं और उनके आत्मदाह के लिए चुने गए कारण और स्थान को देखने की जरूरत है। प्राप्त आंकड़े आश्चर्यजनक विशेषताओं को प्रकट करते हैं।

सबसे पहले, आधे से अधिक या १०५ में से ५७ मामलों में आत्मदाह करनेवाला एक आम आदमी था, जबकि अन्य ४८ भिक्षु या भिक्षुणी थीं। १९८० के दशक में हुए विरोध- प्रदर्शनों के विपरीत आए ये आंकड़े आत्मदाह करनेवालों की जनसांख्यिकीय विविधता की पुष्टि करते हैं।

दूसरा, उन ५७ आम आदमी में से कई या तो किसान थे या खानाबदोश। उनमें से एक ने तिब्बती क्षेत्रों में सरकार की खनन गतिविधियों का विरोध करने के लिए एक खनन क्षेत्र में आत्मदाह कर लिया।

तिब्बत की अर्थव्यवस्था और विकास पर केंद्रित शोध करनेवाले एंड्रयू मार्टिन फिशर नामके एकेडमिशियन ने कहा कि भले ही आत्मदाह और तिब्बती क्षेत्रों में चीन की ग्रामीण पुनर्वास परियोजना के बीच प्रत्यक्ष संबंध का कोई स्पष्ट प्रमाण नहीं है, लेकिन इस परियोजना का सिचुआन और किंघई क्षेत्रों में खानाबदोश और स्थानीय समुदायों पर गहरा विघटनकारी प्रभाव पड़ा है।

इसने पहले से मौजूद दबाव को बढ़ा दिया। विशेष रूप से युवाओं के बीच खेती से दूर नए छोटे शहर में जाने की मजबूरी, जहां रोजगार के अवसर गंभीर रूप से सीमित हैं और सामाजिक समस्याएं लगातार बिगड़ती जा रही हैं।

एड्रियन ज़ेंज़ के एक अन्य अध्ययन से पता चलता है कि चीन ने हजारों तिब्बती किसानों और खानाबदोशों को जबरन श्रम शिविरों में धकेल दिया है।

तीसरा, आत्मदाह के कई मामलों में छात्र और भिक्षु शामिल हैं, जो तिब्बती भाषा और पहचान के संरक्षण और संवर्द्धन के कट्टर समर्थक हैं। इस समूह में १९-१९ वर्ष की छेरिंग क्यी और गोंपो छेरिंग तथा १८ वर्ष के कलसांग जिनपा शामिल हैं।

छेरिंग वोसेर की किताब 'तिब्बत ऑन फायर' से पता चलता है कि छेरिंग क्यी के आत्मदाह के बाद हजारों तिब्बती कॉलेज के छात्र और शिक्षक भाषाई और राष्ट्रीय समानता का आह्वान करते हुए सड़कों पर उतर आए। ऐसा ही विरोध कलसांग जिनपा कांड के बाद भी हुआ था।

इसलिए, यह स्पष्ट है कि तिब्बती भाषा और पहचान के संरक्षण और संवर्द्धन पर चिंता युवा पीढ़ी में ज्यादा है। २००८ के विरोध के बाद से चीनी सरकार तिब्बती भाषा को राष्ट्रीय सुरक्षा और दीर्घकालिक स्थिरता के लिए एक खतरे के रूप में देखने लगी है। यहां तक कि छेवांग नोरबू के कुछ गीत, जैसे कि त्सम्पा और माई ब्यूटीफुल होमलैंड- तिब्बती पहचान और परंपरा के प्रतिनिधि गीत बन गए हैं।

चौथा, कुछ विरोध आत्मदाह के लिए जान-बूझकर पुलिस स्टेशनों, सार्वजनिक सुरक्षा ब्यूरो कार्यालयों, सरकारी भवनों और मठों के पास के स्थान चुने गए। २०१२ में १८वीं राष्ट्रीय पार्टी कांग्रेस के दौरान और तिब्बती राष्ट्रीय विद्रोह दिवस (१०मार्च) की पूर्व संध्या पर कई आत्मदाह हुए।

इस तरह हम देख सकते हैं कि उनकी मंशा सरकार के खिलाफ है।

उपरोक्त आंकड़ों से पता चलता है कि चीन द्वारा धार्मिक दमन की पराकाष्ठा, तिब्बती संस्कृति और भाषा को व्यवस्थित रूप से आत्मसात करना और खानाबदोशों का जबरन पुनर्वास से सरकार के खिलाफ आक्रोश बढ़ रहा है और तिब्बती पहचान और राष्ट्रवाद को खासकर युवा पीढ़ी के बीच मजबूत करने में मदद कर रहा है।

सरकार को इस तरह के घटनाक्रमों की स्पष्ट समझ है और इसके जवाब में तिब्बती भाषा के शिक्षकों, बुद्धिजीवियों और धार्मिक और सांस्कृतिक नेताओं के व्यवस्थित उत्पीड़न के साथ तिब्बत नीति का चीनीकरण शुरू किया गया है।

तिब्बत एक्शन इंस्टीट्यूट ने एक रिपोर्ट जारी की जिसमें दिखाया गया है कि ८,००,००० से अधिक तिब्बतियों को बोर्डिंग स्कूलों में शामिल होने के लिए मजबूर किया गया है। वहां बच्चों को उनके परिवारों और समुदायों से अलग कर दिया जाता है, ताकि उन्हें राजनीतिक पुन: शिक्षा दी जा सके और चीनी के रूप में उनकी पहचान को मजबूत किया जा सके।

आत्मदाह करनेवाले प्रमुख लोगों में युवा पीढ़ी का जनसांख्यिकीय महत्व और चीनी सरकार द्वारा उनके चीनीकरण की नीति के साथ जोड़ने की प्रतिक्रिया से संकेत मिलता है कि चीन बड़े पैमाने पर युवा तिब्बतियों को चीनी कम्युनिस्ट पार्टी शासन की स्थिरता और सुरक्षा के लिए नए खतरे के रूप में निशाना बना रही है।

डोल्मा छेरिंग नेशनल चेंग कुंग यूनिवर्सिटी के रिसर्च सेंटर फॉर ह्यूमैनिटीज एंड सोशल साइंसेज में पोस्ट डॉक्टरल फेलो हैं।

*****

IMPORTANT NOTICE

Dear Readers,

Firstly, I would like to express my heartfelt appreciation for the overwhelming response and support that we have received from you since the launch of Tibbat Desh Magazine.
Tibbat Desh Magazine is the only monthly Hindi Magazine on current affairs of Tibet which includes news on teachings of His Holiness the Dalai Lama, Current grave situations inside Tibet, Events & activities in Exile and of the Tibetan Freedom movement across the globe.
You must be aware, for the past 2 years, we have been receiving complaints about delay and not obtaining the Tibbat Desh magazine on time to our readers. And also we found that many of our readers either have shifted or changed their existing postal address. Therefore to review the mailing address, we request you to assist us in providing the current postal address at the below mentioned address or email.
We would also request our readers to send their feedbacks and suggestions about the magazine.

Yours Sincerely,

Tenzin Jordan
Deputy Coordinator
India Tibet Coordination Office

आवश्यक सूचना

प्रिय पाठकों,

सबसे पहले में, आप सभी का बहुत अभार व्यक्त करता हूं कि जब से तिब्बत देश मासिक पत्रिका का विमोचन हुआ आप लोगों का निरंतर समर्थन एवं शानदर भागीदारी रहा है।
तिब्बत देश, तिब्बत की पहली हिन्दी समाचार पत्रिका है, जो तिब्बत के भीतर हो रहे चीनी दमनकारी और क्रूर नीति तथा विश्व स्तर पर परमपावन दलाई लामा के मार्गदर्शन में तिब्बती आंदोलन के बारे में भारत के सरकार और लोगों में समर्थन एवं जानकारी उपलब्ध कराना है।
आप सभी को ज्ञात है कि, पिछले दो वर्षों से, हमारे पठकों का बहुत सारे शिकायतों हमारे इस कार्यलय में प्राप्त हुआ, जिनमें कई का यह कहना था कि उनको तिब्बत देश मिल नही रहा है। साथ ही हमें यह भी जानकारी मिली है कि बहुत सारे पठकों का पता एवं आवास बदल गया है या वहां से रवाना हो चुका है।
इसलिए हम इस पत्रिका का इस बार समीक्षा कर रहे है। और आप सभी से यह निवेदन करता हूं कि अगर आपको तिब्बत देश पत्रिका प्राप्त हो रहे है तो उसकी पुष्टी हमे तुरन्त देने की कष्ट करें। आप इसकी पुष्टी हमारे नीछे लिखे गये पता या ई–मेल पर भेज सकते है।
अतः तिब्बत देश पत्रिका के संदर्भ में अपना राय एवं सुझाव हमे समय समय पर भेजने की कष्ट करें।

सादर आपका

तेनजिंग जॉर्डन
उप–समन्वयक, भारत तिब्बत समन्वय केंद्र
नई दिल्ली

कार्यलय पताः भारत तिब्बत समन्वय केंद्र, एच–10, द्वितीय मंजील, लाजपत नगर–03, नई दिल्ली–110024
फोनः 011–29830578
ई–मेलः indiatibet7@gmail.com

माननीय राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद को स्मृति चिन्ह भेंट करता बीटीएसएस का विशेष प्रतिनिधिमंडल

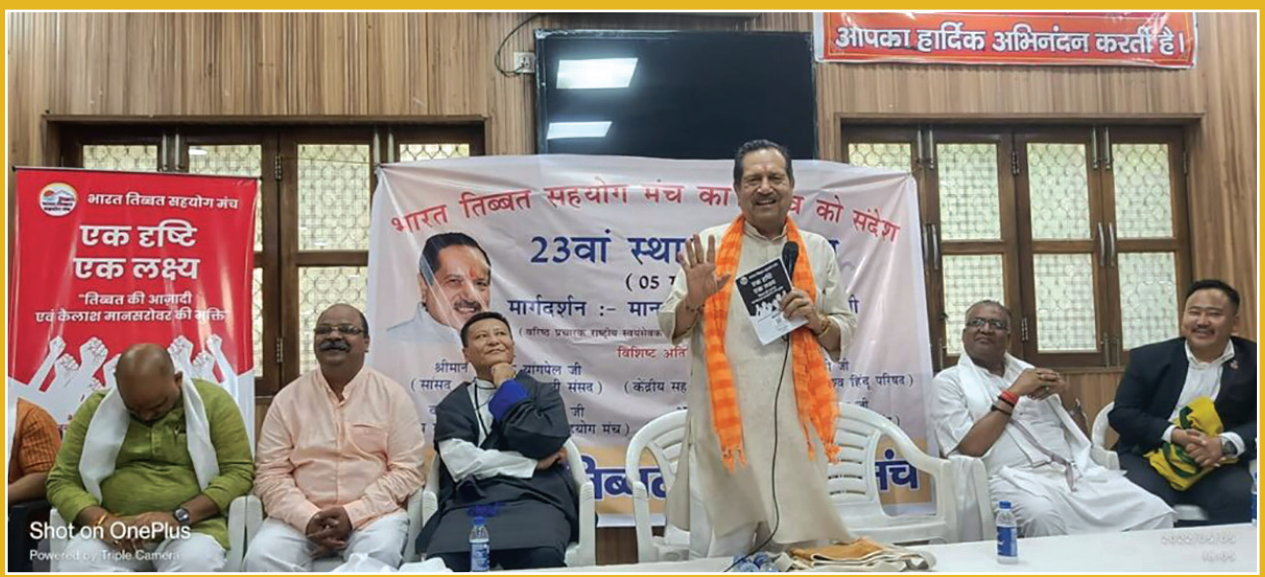

दिल्ली के कश्मीरी गेट इलाके में महाराजा अग्रसेन पार्क स्थित वैश्य बी.एस. अग्रवाल हॉल में भारत-तिब्बत सहयोग मंच के २३वें स्थापना दिवस समारोह को संबोधित करते डॉ. इंद्रेश कुमार